ण

अरण्य काण्ड

आरंन्यकांडप्रारंभः ॥ श्री॥ [illegible]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री रा० ॥श्रीगणेशाय नमः॥ अथ लिष्यते आरण्य कांड॥ दोहा जै गुरु गणपति गौरि जै जै संकर सुष धाम जै रिपु
१ सूदन जै लषन जै जै ति भरत सियराम करष लकवी ना लिए जै ति सरस्वती देवि गुन गन जास अनंत प
दहैं सुर नर मुनि सेवि चौपाई लषन सीय रघुबर छवि छाए भीमर दंडकारन्य माहि आए मुनिजन आ
श्रमन सांवि लोके जहं करि केहरि संग हुं असोके बर बल कलजनहं बहु बगराए बोलति विव
लति हं गन हं भार बंस न जस सो सोभित केसो मारतंड मंडल नभ जैसो ठौर ठौर मुनि बालक गा
वै मष साला चहुं दिसि छवि छावै कुसम गछाला कलस भरे जल जज्ञ पात्र सुभ समिधि मूल फ
ल फूले फले विटप बहु नीके फिरियें न जल बहु स्वाद अमी के होम धूम सो हैं नभ मंडित वेद घोष
जहं होत अखंडित सोरठा सरसी सोभित सर सरसिज निकु मुदित विहंस निमीन हरित पीत त्रिन जुत
तहुं मि आश्रम कंटक हीन चौपाई लसति नर्मदा मुनि सरुस अठासी सांत दांत चेहं नप्रकासी कंद
मूल फल ल [illegible] सन मम चीने बसन निरंन सव जनि माचीने कुसतन तन जतने माटिल जाए वलक
ल जुन मृग चर्म सुहाए मुनि समाज लषि धनुषधर नारी चले राम निन कारन सुषारी राम हिशा निकि ते १

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सब आए प्रकार करहे सुरूप लुभाए सबै मुनी सनाथ कहं कीन्हीं बहु प्रकार रजा पुनि कीन्हीं पु
लकित तन अस्तुति कवित कवित कि लसै दिव्य विषद मिश्रं न मिसु छकि छकि इमि वैं गसबै बस पे
मारे यहं हिं स्तुति यह है संग विहारै तेरा अस्तुति करि बहु भांति मुनि रहे चित्त ब्रर जोरि
न अंतर कौ गति जानि प्रभु विहसि लिपो चिचो रि चौपाई पुनि मुनि अत्रि अनुपम सुख छाए॥
एम हिं निज आश्रम लै आये अरघ पाद दै पूजन करि कैं परसत हिं पांर परम सुख भरि भरि दृग बहु उमा
स रूप लोनाई विज्ञानी मुनि गए लोभाई छवि छवि किरम सनूप निहारै ते हिं मद परमानंद
हि वारै पुनि प्रभु कहु आश्रम सर भंजे मिलेहु आर गवने ठु मम संजे बसे रैनि भरि जाग जो
रै करि निति कर्म चले बन पारै मग गज व्याघ्र कुसरि नेत हरे वेलि हुं विटप लसेत तरु रे छिव
रन छपि सेतिन धुंनि धारी सरितन नीर स्याम मैकारी तेरा: लखन सी परधुनाए तहं लखो नि
सा चर घोर धरि सरीर कुंजल समय पल आवत जैनु निन पोर चौपाई: मुखहि दरति श्रुति घोर
बड़े हैं रहं अंतर नर भरि गड़े हैं पतिरें चालवाघ की घालै घारे सुर करालजें जगलै तीन सि
र ख़रज्या घुरु चारि है चक रसम गज गज सिर भारी छवि विप लटिक रद कीन्हे ज्ञाति
से ने सनर पावन कीन्हे लखेंन सीय एम हिं लघि धायो भीम नादक रि धरिनि के पापो अ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर०

तिआतुरहिंसमीपहिगयो लेजांनांनृकिहिंकरतत्रासभयो वलकलचीरजटासिरधारी आ
युधसहितनालियेसगनारी 'कैसेतपसीकेहिविधिआये मोहिंकोउमुनिनांहिंवताये
दोहा मैविराधयहिविकरवंनमुनिगंनकरउं अहार जानोचाहतअनुजमनवोलेरामउदा
र चौपाई देषहुलषनप्रियाअकुलांनी जीनेंमेयहनिसाचरवंका त्रासकरिकैकैकी कै
करनी लछिमनसोंविलषतवहुवरनी सुनतलषनअतिक्रोधितवोले फरकतअधर
धनुषकरतोले हमप्रभुसकलचराचरसांई वांनीकहीअवलकीनांई २२ सजेसासन
मोहिंरघुवीरा मारिगिराऊंयहिंतिनितीरा सुनिवधपुछिकिरामिकहयो विराधु कोहैकहै
सरचपअगाधु रामनामनिजकहिकैगाये सुनितेहिचापहुपुंछतभये सोकहपितु
जननीमिनिमाता रामविराधजगतविख्याता दोहा कहहरिहैजवसुतसहिंसोचहुंहामि न
निमार हमहिंलषनलखहैजुनैंहिपसिपहुंतअतिचार सोरठा विधिकोमोहिंवरदां
न करतेननतनआयुधलगें अहौंअवधजनतांन जीवचराचरजहंलगें चौपाई
तजिसिपजाउंभाजिलेप्रानहिं सुनिहंसिप्रभुकरफेरतवानहिं नीचमीचतेरेसि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रनाची गातन वचममवांननवांची असकु हिसानवांन रिपमारे बाधितारिछितिं
नासिधारे छंडिजांनिकिहिंनवसठधापो नखनसतितप्रभवांननछायो सोजभ्रां
नतेननेसुरकरे पुनिधायोकर सलतिधरे वेगवंतसठसूलचलायो जगवां
ननप्रभुकारिगिरायो नमनतेगिन्योसुलकरिकेसे राइकेतुरतचक्रलिजैसे पुनिहि
उवंधुधारवासिमारी सोउग्राइनिजकंधनिधारी छंदहरिगितिक लैचलौहरिसोनि
रखिमारगजायनोई वचनसो नहंकरयौ मइमसकारसुंदरवैननिरमैलसनसो
ॐ बड़ं कालमहंपरमिल्यो बांहनचलइमगकिनहरखसो कहलखनविलपतजानु
कीवचजानछमउंचरखसो सेरा सिपविलापश्रवननिसुन्यो लख्यो वनहिंचाति
घोर मतिडारहेउकारिमजहनिकृपानकरिजोर रघुपतिगिंयोविनभुजनिसांपरवि
उजिमिवरसैल सानतमठकेनहुंहन्योगईताप्रमनमैल चौपाई विधिवरवलसोंमरे
नमारे नयप्रभकहमैमंचविचारे वेगिलखनएकगाडवनावो उठिहिनममपह
चरनचपावो वाल्योतकसलनिप्रभवैने जोसोतमहिंजनदकेचैने वइरिहरविउरकसो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं: निरधु रामरूपा लष मैं वरसाधु जों सो वैरी सीं वडभागी जोंन्यो लषें नहिं अति अनुरागी
३ मैं गंधरव हौं तुंवरनामा नरेउ कुवेर श्राप अभिरामा तातें नृप पद परसहिं पायेउ जन्मु वं
नेकेंन कलेष न सांपेउ श्राप पाइ मैं तिन हिं रिझायो तव तिन मो कहे मेरु वतायो हे०
नव मारिहैं रघुनाथ तो तितव चैहै निज लोक सो सुनि मैं रखिन हिये निसिचर भयो व्र
सोक ११ चौपाई गाउं हिं गाउं कठि हिं मम प्रांना सो प्रभु पहिले हिं रचेउ विधाना मोहि
गाउं अवलोक पठैये मुनि सरभंग यास प्रभु जैये तारिहि गाउं सीतापरें आये आनि र
रषितती निउं जे न माये करि असनान चले पुनि आगे मुनि आश्रम कहें जे अनुरागे त
हां अकास इहूर परे ष्यो उतरे मारतंड सम तेषो कह्यो अनुज अनुसि पहिलं प्रभु ई मन
जोन हुं पहहै सुरराई छनविलमो तो मै चालिची• मै सुनत वचन तिन तै सरहि कीन्हों
रामहिं आवत निरखि सुरेसा तुरतहिं अयने गयो निवेसा तब तो नितु जन पुनि मतिनि
कट जाइ किये परनाम मुनि प्रक। इकचवहु मांल्यो नषि छवि अति अभिराम १२ चौः
आतिथ करि पुनि फलसमुभ सी ने तिरघुनाथ पटरव सो लीन्हे पुंछ्यो प्रभु सुरपति आग ३
मन वत सरभंग सुनहुं सुषभवन नयवल व्रह्मलोक मैं पायो तेहिं तजि विधिवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सवारिंपठायो तुरत स्पसन तिनमेवन तिजपो लहिद स्पसन बिरतार पमयो चवसयतनपकल
सोहु हमारो मुनितिसकामे रामविचारो मदुमुसकाय कह्यो मन मे गुनि हमदछीनति
लोव उचितमनि पुनिकहकहियबसेरम केतिंवन मुनि कहजै पुजनहांसतीछन मंतावि
नयछिमहु मारग जायहु गहे करतिसरसारंग सोरठा पुनिमुनि कहि चलिचालुरी कहसो
सुनहुसुषधाम चिनहु बजो लौत नतजो रहोवडे सियराम सोरठा लबंनसीयरघुनाथ
रावमनतिंयेडोचनल चरतनधरि मुनिनाथ कुमतिमतिविधिलोक जो २८ चौपाई
रामसिया आगमन विचारी आये बहु मुनि बहुतपधारी रामहिंबहुसरातिके वोले ध
र्मसुर्पसव आपन बोले जोरिजोरि सिंगरे जुगहाथा कहेहिं हमेहुं जो विजरे नाथा प
रमसील सरनागतपालक सुररंजन असुरनकुलधालक जेतिंनपकरे अधरम अति
होरे लेरयाग यालैनतिंजोरे जाके पृजाधांन सम अहई तेलिंत्र पंगतिजो ग्रिहुं नहिल
हुई चोथो भाग धर्म कोपावे नितनहनतन छितिकृतिचढावे हमरे तुमसो नाथ गोसांई
३१ ई निसिचरहंनै अनाथहिंनाई सेठा देषहु मुनिगंन लाडपेयरे अनेक निरासि धोरय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर: ८ कुसैन की सपैन विचरै वन मुनि नासि चौपाई लंक ते चित्रकूट पर जंता करहिं निसाचर मुनि
कुल अंता पाहि याहि अब घालहु राम अबसहुचलतेजहु धाम तुम सो प्रभु जो क
रेयैपे जाके पास प्रकार न जैपे दुष्ट दुखाल धर्म प्रतिपालौ वेगि निसाचर कुल अब घा
लौ अति स्पाल सुनि आरत वैनति बोले राम भरे जल नैनति अपने हिते यहि काज
हिं आयेउँ पुनि मुनिनायन आयसु पायेउँ भयो म॰ ताफल मोहि वनवास करिहौउ
सुरेरि भुजंन नास भ्राता सहित मोर बल भारी देखहिं मुनिगन होहिं सुखारी दोहा: अब
कहि लछिमन सिय सहित मुनिन संग लै राम चले सुतीछन आश्रम हि लखत गिरिन अ
भिराम १९ नाघि सैल वन सरित वहु पहुंचे ते हिं थल जाइ जहां सुतीछन नाम को यहुँ सैन मा
मुनिराइ १७ चौपाई विविधि भांति द्रुम भ्रमत जगाये जे गनन हिं सुनि ध्यान लगाये ते भु ८
हिं उर चतुर्भुज हिं वपु कीन्हो मुनि अकुलाइ खोलि दृग दीन्हो दुभुज देखि आगे अनु
॥ राग्यो उठि सुंदर वपु निरखन लाग्यो पुनि पुनि नविकन कि दंडवत सुख पायो जनु अति
क्षुधित सुधा सर पायो मुनितन अति पुलकावलि भाई लख हित राम जैउ सीस ठारे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आँनद अंबुद तन देउ नैनानि उपमा देत सुक कवि मन रिझै नैनानि रवि लखि जनु जग सरसिज हरषी सो
हरि कनक मकरंद नव बरसी सो मम निरखत देखि विदेह माई सिय जुत पाजे प्रेम मगन हरई हेम तन लखि
आये पाय पर जोरि पाँनि मुनि गुर लाग्यो अस्तुति करन पुनि परम हरष उर धार भुजंगप्रयात
आयो राम सीतापते ते धि सेवा रताः सर्व देवान धात्रादि देवा निरंतं त्वमेव क्षमासील अब्रुवे
सतं पालकं सूर्यवंशे कलंकं १ मायादि सा ते वो न चाद्याभिरामा जटावल्कलैर्भूषितापूर्नकामा
मा ज्ञानानंद तत्वी तत्हि याहि मूर्तो महीपाद ज्ञाता नयस्तो मि पूर्तो २ नमद्वाम्भोधि संतारने या
दपद्मं निरंतं नरे शिर्म ज्ञानंद रूपं समं विद्धि माया समस्तास्तरूपे विमुक्तो यथा स्याक पं मो
हयासे ३ निमग्नं महामायया पातेनंधकूपे ४ कलत्राद्यं गं जप्रेम संबंध रूपे निरीहा गतो हर्ष
पसुरूपे समुद्धारकामो सिसा केतभूपं ५ यदत्यास्ति ते सर्व भूतेषु वासः सदा भक्ति जुक्ते नमा
पापप्रकासः जने भक्ति हीनै विजो कामचित्ते तनो विस्व मायामहंकार चित्ते ६ यथा जोगमे तत्वरू
पं स्वरूपं स्वया सृष्टि यते सर्व भूयाधि भूपं जथा तो यथा ते रविर्मोत्यने केः स्तथा मोतजुक्ते सु
भासि त्वमेकः ७ अहो भाग मे तत्व मोनेसकस्यः यतः याद द्वन्द्व मायापरस्यः अतंतमर्वं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्वारः दृस्यथ्रमल्हनस्तन समी हेसतसीतपासेवितंपत ७ सर्त्सं दूचतं लसन्नं रसासं मनोज्ञापुधं
५ कामकोटिप्रकासं म दयाई हनं सेचितं लहसतेन पदंध्रि हृपं सर्वसासे प्रकेन ८ दरोनकु
ल लैं नो सोतसत्र सामगा वम परंजोन कोसे रसं तेहपावम पसोपस्पनि संमहेसोंनगीतम मु
रातं मजेरमवं दूलसीनम ९ दयंरस्य मूर्त्तिर्म्मनस्याविभातु महामुक्तिं रोनोवहिजोनुयातु न
चान्सं वरं रामकोटेकलपितसिपाध्रिपम्मैसुभक्तिर्म्ममापि १० हेल महाराजदसरथतनय
सुषमाजितवहुकाम प्रधिरसनं ममसर्वहृंवसतरामतवनाम ११ चौपाई स्तपमानपेवं
शुभयेसम निजतेजोजितवहुरविसेसम निजतेजोजितवहुरविसेसम तमवोचहितं
रकुलकेत सस्मितमिंधंमममपसेत मदुपामनपाजातममलनतर मितिजानामिमनसु
वमुनिवर अजननमरनमयतायनासनम विनाकिमपिनहिममोयासनम १२ ममसेवंन ५
निरतस्यानिरंतर मेयमेवकृत्योहंनरवर १३ त्वयाकृतं ममपत्तवराजं पठतितस्यानुसंप
दमाजन पतोभवतिमयिपरमाभक्तिः सकलेंद्रियरोधकृतासक्तिः त्वमसिमकरवंदेम
निनापक संततमममनिर्मलरजननापक हेल देहानेमपिहासमाभवितातवजितचित्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखानामयिदुर्लभआरामनामवरविन चौपाई सोलनिमुनिन्हहि आनंदगाथा कह्योजोरिक
रमयेसनाथा सवनपफलहिंसमरयंनकीन्हा दीन्ह्योरामहरखपुनिलीन्हा हरिकर
वासहंमहिकहुचहिये मुनिकहहरखिहहेप्रभुरहिये वसिहैंमुनिहुसवैरनआई मैकरि
हौंप्रभुकीसेवकाई येप्रभुआश्रममगनिवंधाई वसियेरहांमुनिहिंकीनाई ४ कह्योरा
महंमुनिमंदुमुसकाई सनेहनीदूंनपीतिमहाई मगनिहंनेजोउसुमुनिनाथा जैहौंप्रात
धरेधनुहाथा सुनतकह्योमुनिअतिअकुलाई वसहुकछुकभावनरघुराई होतपर
मसुतीदूंनप्रेममनयेंनिपुनिविरतनराम सीपलखनजननआनिसुसीगजलपलअवि
राम चौपाई करिसंध्याफिरिआश्रमआये मुनिसंगपरममोदसोछाये सुखसोंसिंग
रीरैनिविताई करिनितकर्ममुनिहिंसिरनाई कतसंगमुनिआलरीकरवै कहियेतौ
तिनकेआश्रमजावे मारिचकहिंमुनिआसिषदीन्ही पुनिकरजोरिविनेअसकीन्ही करि
प्रेमनिसनाथअवजाई पुनिप्रभुमोदहृदयमोलिआई मुनिनिसंगतीनोदूविदाई चले
वनहिंमुनिआसिषपाई हरिसांनवसीताहंसिवोली पर्मलातसुसारहिंमनतोली :

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं: ६

सहमविषेविचारतिंनापा होत अधर्मनकोवहुगोपा होत पापतीनिपेहेवडेपरसत
कोगोन विनावैरकोमारिवोमिथ्याभाषेनजौन २० चौपाई सतिवाहिनमहरेषतुम्हारी
परतियसपनेहुंनाहिंनिहारी इहुंनहमेधर्मपुरधारी सवकहेंयिपपतिसासनकारी च
ले आपुजोचलतरहेंधारन विनाविचारेहिंकरिपुनधारन विन अपराधजोप्रानिनमा
री भयो अकारनयह अधभारी धरमनीतजेजांननअहंही विन अपराधहिंवैरन
करहीं करेंधनुसरकहेंमनिवरवेषा अस्मुनहंपनाघतवेषा कैगमनहुंधरतजहिक
५ रै कौनतठनौधनुसरधरै सवमुनिनकोधर्मविनासै सोयाचीनलनोरतिहासै होत
सतव्रतीमुनिएकरह्योसमदमदयानिधांन तुरयतिनेहितपहरनहिताधातीहंडे
क्रिपांन चौपाई लियेलियेनेहिनेहिमतिगरे तेहिसंसरगाहिंहिसामई तेहिंसंसर्ग ६
नकीसोपायो सोरइतिसंसहिंहतमनिहिसुनायो कारहिंनमनिजंनअस्त्रनधारेंन जा
तेसोरजीवनवधकारन अस्त्रहिगुनएककारनरहन वहुनतेवमुनिकरेहिंविचरन
न नाघनतमकरेंसोनेसिवायो मनिधरमहिंअस्मरकरायो सवनेहसनहिंपाइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिंग्यांनी करितपन्नोससहैंमुनिज्ञांनी भावतमोहिंसुचिहैतनयकारिबो संतसुभास्तवनहिंवि
चरिबो नारचयलतातेंजोकरही छमनजोगसोंमीतुमसही सोरठा कह्यो विहसिमहु
राम निजकुलजाहिरतुमकिपो सुनहु वचनअभिराम तुम्हें कह्यो सोधरमवर २२ ते:
छत्रीधनुधारनकरहिसुनहिंनआरतचैन दंडकवासीमुनिसकलनपेमयहिंकेअैन
२३ चौपाई आरतवैनहिंविविधिप्रकारी जहीअंनितिनसरनहमारी जदपिसमर्थनि
साचरनासा देहिंआयनहिंतयदतिवासा तिनकोदुखमोहिंनहिंसहिजायो तातेंकरत
प्रतिज्ञहिंभयो मुनिमधिप्रनकरिकिमितजिजाई मोमिनितनयहरहेकीजाई दुसरे
लघनहुंत्यागहिंकरो प्रनप्रहतजौनजोप्रनधरो मुनिपालहुंमैविनहूंकरे अवनोप्रेमम
सरनहिंगहें मुनिजनसोंकहुखहिनिजजांनी चलकहिगमनेसोंरगयानी जटामुकुटसं
हरसिरराजें विचविचगुंदसुमननतिभ्राजें दोहा लसैंजगुलतन्नीरकरिपीठिपयोमगचर्म
भालतिलककीन्हेंललितकसेंवंधुदेउचर्म चौपाई पीछेलसनसरहिंसकफेरत सावधांन
व्हैचहुंकितहेरत महिद्विसियासोहतिअतिकैसी भक्तिसिंगारज्ञांनमधिजैसी देखतसरि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं० तासरमगविहंगन गुंजेंइनवाराहंनअरनन जाइमुनिनपल्लकि रोसुवारी विहरैतहंदसवर्ष
७ विहारी फेरिसुतीछंनआश्रमआये सोपुलकिनमुनिअतिमहपाये तहांवसेसुखसोंकछु
काला मुनिसोंबोलेवचनरसाला आश्रमतेअगस्तिकोकहां जायोचाहोंमैमुनितहां
हरषितसुतिनवमुनिअसकह्यो पुरेमहंपुन्यचारहतरह्यो तेहा जोजननयांचआसकोआश्रम गस्ति
हेरधुराइ चलियसंगचलिहोमइं चलेरामसुखपाइ प्रथमअगस्तिरि अनुजकोआश्रमनिरख्यो
जाइ तिनसोंमिलियुनिवसिचलेजगरेजुलोमुनिराइ चौपाई कह्योलखनसोंराघुराइ इहांरहत म
मुनिगनसमुदाई बसतिलोकपुजितधरजोनी जिनकीवरयससितसवछोनी सतहितरत अनुसा
न धुविज्ञांनी मतिनिरतमनकमइंवांनी इहांकरवसेवहिंवनवासा जिनकोसंगलहिमरवइला
सा सेवनहरमुनिनियतअहारा मनिअगस्तिजहंतेजअगारा सठयापीरिपुमिथ्यावादी
करकुचाली अरउतमादी जियहिंनयेयहिआश्रममाहीं अवहइनाकिसकहतइतनाली वस ७
हिंजेइतवंदितफलयावहिं फूलेफुलेसुनरहछविछावहिं तेहा गयेसुतीछंनहरखसोंजहंवे
ठेमुनिराइ राममवआरपहिंकरतसुनतिसिषासमुदाइ चौपाई गहियदरामागमनजनायो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनि अगस्ति अनुपम सुषपायो सिषन समेत तहां चलि आयो रामहिं लषि नैनन जल छाये सी
तो सहित सुषधाम मुनिहि निरषि विधि किये दंडप्रनाम मुनि उर हरहरि अंक लगायो सुष बोधो
धि हरषौ रिन तहां पुलकित तन आश्रम लै आये नैरं सुंदर आसन बैठाये विविधि भांति पू
नि पूजन कीन्हो कंदमूल फल भोजन दीन्हो बैठे पुनि ये कांत तहिं जाई मुनि सीता रघुवर लक्ष्म
न भाई बोले उ मुनि तिन्ह तेऊ करजोरे राम प्रेमसों नैनन बोरे दोहा जगतारन वडकाल नेनव
अवतार तिं जानि यरषिरत्यो प्रभु आगमन तिं यलु अतिनय ठौनि चौपाई जगत आ
दि तनवतेज सरीरा सोजब समलिन सक्ति करि धारी भे आवा हू तनन वजै रिंकाया ते हिं पुनु
परि भै दो सिन माया महतनतत्व ताते हू द्भयो तेहिं ते अहंकार पुनि भयो महतनतत्व मिलि जो
अहंकारा सतरज तामस तीनि प्रकारा तामस ते सुछम भे भूता राजस गो सत मन सुर भूता
लिंग भयो तिनहू मिलि ध्यायक ते हिं ते भो विराट जगनायक काल कर्म कै मतै सब भये ति
र जगजीव देवनर ठये सुछम तोरजनै मकरि धारी प्रगट भये हरि विधि त्रिपुरारी दोहा पा
वन उत्पति प्रलय करन ते नीति जगनीस जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति उ तिनसी के परेस चौपाई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं:
२

सो हरि चितनमय अौ अविनासी सबको नव परकास प्रकासी सांमी है सरूप तुम माया विद्या
विद्या वे रूव ताया जगत अविद्या प्रगत करावै विद्या जीव निनि चित लगावै जीव अविद्या
वस संसारी विद्यावस नित मुक्त विचारी जे हरि वे तन विचार हिं भावै विद्याता के उर बरआ
वै नवधा भगति हिं ते करि सेवा जपि तें मन नहिं जोन हिं भेवा तिन कहें मुक्ति सुलभ अति
अहई बिना भगति तुव कोउ न हि लहई कहें लगि करन उपायं न रहो अनुसारे सब परम मने
कहो तेत मुक्ति हेत सन संग हे मिलहि जो यहि विधि साधु सांन संत रहार हित संभ चित मजे
न अगाधु ३ चौपाई विगत बासना रहे हिं अ संगा ग्रंथ निरत कि पकम हिं गंगा संम आदिक
पुन धारं न कीन्हें स्यवस फिरहि न वपर चित हीने ऐन कों संग करे जो कोई ते हिं हरि कृपाल
नतर तिहोई युं नित बम नि हे तम गवांना मोह मार्ग वरहो न विज्ञाना तो ते उपजति सुनहु देष २
रारी प्रेम लछना भगति तिहारी जीवं न फल रघुवर सति सोई संग जो न सभगतन कर होई
मे रो जन्म सुफल भया आज पूजे मन वांछित सब काज लखे नैन यह रघुमति तोरे जयतन प
म घ सब सुफल जै मारे तेता सो वतन जागन सपन हूं वे तन चपल वनात रहहु स सं मम मन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बसेहिपाराममसुखकात चौपाई श्रीरघुजीनेसंमजारसंचारी मनिमैमृठिकोसतरखारी
सारंगधनुयुनिधिपसुनिरामहिं अहैतुनीरखैन चमिरामहिं कह्योमुनीसमगेरस
सारा संजनहुरामवेगिमहुमारा पंचवटीस्यौंनेजगनोजैन गोतरवीजरसुठिहंदरव
प न कोननवासकेतरकैकरियै नरंनेसुरमनिजेनदुषहरियै रामलखनसंनिहरखितभले
सियासहितवननिरखतचले मारगमहंपंकगिहुहिंदेख्यो विसमितहसेसिक्षिजसंम
लेख्यो चलितुमकोंपुछ्योरघुराई कहेउजटाइउ अतिहरखाई सोरठा चिरंजीवहु
तुम मेतउपितकोप्रियसषा मोरजटाईनाम सिरसंवहु आवहुनिकट चौपाई पितुसें
ममानिनिकरतेहिंगये रामयुनामकरतपुनिमये रे आसिषनवकहयोजटाई वसि
हौपंचवटीमहंजाई जवजेहैहे उवंधुसिकारे तवरैहौजानकीनिहारे कह्योएमसु
निमदुमसुखकाता तेसतिकरियेचालिसंगताता दूरिनवडुनसवैनियरेसी तबहिंतेताक ग
ववेहती पुनि आगेकरिकीनपयान पंचवटीनिरख्योभगवान लखनकरीपायरपं
चवटीहै फूलेविटपनलतनसरीहै संघनपंचवटवरतरहैं सोहैं पंचकुंडनिरसतम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरः ९ नुमो हे तात विरंची अनुपम लघन नतरं परनकुटी अभिराम अमित सीय रघुनाय के कारन
रतन विश्राम ३३ चौपाई गो लवृहि जरंल सन तंर गिनि अधम उकंक रं युगर भवृगि नि
वैठ परन कुटी तरं जाई अमने लारि सिय अति लुवयाई राम हि निरखि अति हिं अनुरागी
करिय नाम गुन वरनन लागी हे तुम सुरतरु सव अवतारन तुम हि सकल जगत के कारन
तुम रवि के जे जगत विगसावन नाथ तुम्हे सव जगत न सावन जग जलनिधि उतरन को
हैं नावै अवरि समोल वोध भावै नव प्रकास जे हि उरमहं सो वै ताको संभ्रम तिमिर हिवो
वै वलका मांहि करिह रिजोरे मम अध राम नंदं यर सोई तात वल दल वडन धर
मघ नवंचन अगोचर रूप असक हिं सीना ढविरहीलखि ढविढलक अनूप सोरठा
लखन सीय अनुराम वसे नसं अतिमोद सो आश्रम अति अभिराम ते हि वरनन क ९
डुकर न सो ३४ चौपाई सहित कपोल लसहि नउ केसे रिखिन भवहि के धुमहि आसे किस
लै सो रहि विरय विसाले कोमल अमल लित चतिसाले सिय कर जो अतने ढविम
ते परसत सो जेनु तिन महं हरी उनत नहसमने समना रा इ रहर हत रं जेन आधि पारा

७२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुंजहिं भौंर उलूक नन की धुनि निसा समै बनु करहिं लुक बिगुनि करि कलमन करमार्दित चं
दन सुरहर बन परस नो सुगंधन सुकन रलित राडिम दुमसैं ललित लतना विदुम छि
बिररीं पुंगीनागबेलि सोमंडित औरऊ लतता बिनोन अवंडित सोरठा बन श्री के जेंत
ऐन बने सुगंधित कुसुम जुत बोलहिं मरि उर चैन मधुकर कोकिल अवलित रं ३६
चौपाई बेत लतता जुत बन अति दुरगंम सोहिरस्यो सोतजहारसंम ताजिरहीचमरित
के चमरन चलहिं जुथ्थ करि करिन गडहरेन बिहरहिं तसा हरिन समुराई कै अटबी
कै राज सोहाई स्याम तमाल नसहिं सुखकारे जेंनु नासपन बहुतन धारे कपि संजुत
नर सोरत तनीको धुज अरजुंन रथ के जनु ठीको पहिं बिधि सोभित बन चहुं वोरा
जहं तहं नाचि रहे बहु मोरा जल थल मल सिकार सुपास नरांकी नरघुबर सुखबास
बनहिं बिहार करहिं मन भाये बरखहुं कतरं काल बिताये रहोतयेक समै हरि रघ
सोगोद बरिके तीर सोभित सीता लषन जुत बैठे आसन बीर ३७ चौपाई निरखि राम दु
ष अति सुख छाये लषन जोरि कर पुछन भये मातानी बरेसकर जेरा कहें पनाथमत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रा॰: जोग न षेद बिरति मन्ति अरु ज्ञान विज्ञाना यए प्रेम रस सकल रहु सजाना सुनि हरषित बोले रघुनं
१० दन सुनहु मेक कुल्ल कानन चंदन सो न औ असन विलहु तनु माया अहें अनादि वपुहे रर
साया विधा वहु रि अविधा ने ह पे क अ बे द पेक मैवे स नितानंद ज्ञान गुन जोरे चित अ
ज्ञान सहय हि सोरे अहर अमाय करे सर अ सा जनन मरन बिन वेद प्रसंसा होत स
हु जीव को रूप रंमि जानै कि पे विचार ना सुसरीरन भेद अव भवन नहुं सो सुनहु प्रकार सहि
न अविद्या वहु है विद्या सति तनु मुन मन्ति कि कुहंहि विचारि बुध सहित अनंद्दं तस वहुअ दनपुस
तुवहु तु विवर्द जिन सर्व कवहू मन्ति न अहर हेत आतमा आतम रहेहुं गुनि असंत उ जनि
सै कोहु करि कुतर्क उपदेस न माने जिनके हैं निसा वहु उध जाने सि सूं मेलु बतन जी
पजेरै हरि जि पय कनि नजांनन तनते हैं ते रंजउ जि व वहु कारावे लहि सन संगति करै
तुरि जांवे करि मन चारहिं हि दि वि सुखजे रे सुनहु लवंन है विवर्द नेर कसि पमु सचारि १०
परकार हि ठमति चारहिं हिरेस विचारा हर कोउ कर्म मिश्रा भक्ति मार गरेस करहं अव
राधहीं कोउ विरति मिश्रा भक्ति मांगी साधना वहु साधहीं कोउ ज्ञान मिश्रा भक्ति सो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परब्रंम्हकोजोनाचवै कोउसुधमतिहिं आसरैहैमालिनताभनकीरहैं ॥४८॥ दोहा येई
फलजबलहतहै प्रेमीताहिं अकाम नेई चारिउमुक्तिहैं रखिनवरसौराम ॥४०॥ कै
सोरामपुनिसुनहु अवमक्ततनहूनेभेद मुक्तिचहरिकैवस्यपुनिनित्यमुक्तकहंवेद ॥४१॥
चौपाई जेकरिभजंनमुक्तिसुमलरहैं जिनकुरंमुक्तिजीवकविकहै दुरहिंजगनरेसुन
पावहिं नरिप्रकासकैवस्यकहावहिं आवहिं जाहिंजेईममसंगा रहतसेहउरप्रेम
उमंगा नित्यमुक्तितेजीवंनजानो भाई अपनेसमतिनमानो सुनहुंजेतेयहअदारहु अरे
ईस्वरसजंनमहंनहिंरहे नमनहुविषयंनिअंनरागा करिहेयहकामादिविभागा हिंसा
येहहुचंचलनाई भ्रमअस्तयरताभुनिगाई आसकताअउविस्वविलासा विषमव
हिजुततेयहप्रकासा जेगुनसोहिंनुजीवमहंहोहिं ईस्वरमांहिं जिनविनजांनेकोउकहंहिं हि३
ईस्वरजीवहुकांहि ॥४२॥ चौपाई सर्वअविसैसर्तक्तिमसाई कोटिनविस्वनव्यापकताई
सर्वनरहितजगतिरवसोताई सबअवतारनकारननाई आनमरामहुमनरहिसीवो अ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारं: तुलितप्रेमजननकहँहीयो बहुविधिअंनयमसीलनिकरिबो सुमिरनलीचैनायनिहरिबो जो
११ सुलयसवियिजउहैजाबै चेतनगतिकिमियरनिसुनावै येगुनकहंतिहंमतिमरवैस सुनहु
विमलयेसउरतिमेस इंद्रिनमुखकहुचैनजेती कहिपेतानविलगीतेहीं चारिभेदति
नकेयेजांनो कैमनमेसहयवखानो सोरठा हेयपमहिंजेनमान व्यतिरेकहुयकहेंद्रियहु
वसीकारकेहजांन विरतिविरागीभेहये चौपाई संमदम आदिकमहंश्रमकरिकै भजिहें
हरिमनहाथुनिहरिवै करिआरंभजतनमानकलावै दिनदिनविमलविरागबढावै निजहेसै
नवैहेखवेहेसै वुधव्यतिरेकविरतितेहिंलेषै योंनवासनासोउधरतितित एकहंद्रीसो
विरतिजननगाहिन वसीकारजेहिं विरतिविसोका सोनहिंचारनसुखत्रैलोका साधन
येतिसुनहु अबजेती करिसंदेयकहनलेनेती इंद्रिनकरिजेसाधनकरिये साधनभक्ति ११
तिनतिंउच्चरिये भाईतिनकीहैविधिजानो वैधीरागानुगावखांनो दोहा विधितेजो
वैधीकहीरागजमिलितविधिहोइ कहंहिंनाहिरागानुगा कविकोविदसवकोइ ३४ चौ०
मागनजो अस्ताहियहोई (कहँहिंनाहिं) विनहुं विरति अधिकारीसोई सास्त्रनिपुनमेदिनु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्तिप्रवीनै श्रद्धदृढ विस्वास सहित कीनैं तिन त्रिन्ह्नी उत्तम अधिकारी अब मध्यम अधिकार वि
चारी निपुन न सास्त्र हिं सरधा कियें दृढ विस्वास गहे जे हियें सो निकिष्ट जे हि सरधा नाहीं
देषी सुनी भगति जे हि मांही तिज मनन जे अपस्मृनै देषी नाहिं अधम अधिकारी लेषी जे
हि परद्रुवैं न क्लै भगवान वा रेहु मह सो प्रेम हिं जोना साधन भक्ति सहित अधिकारी कहेउ
कथु कसंछेप विचारी दोहा सुनहु भक्ति के अंग अब तिनके बहुत प्रकार मुख्यमुख्य मे उत
त हौ जे सत ग्रंथनि सार ४५ चौपाई प्रथम हि है सत गुर को पाउब दृतिहिं इन्हा विस्वास वठा
उब पुनि सत गुर की सेवा करिवो साधुन मारग मां हं विचरिवो धर्म भागवत महं अनुरा
गा अनुसरब विसयन भोग हि त्यागा भाजन भाव चाह उर धरिवो ते हुं महं मन हो कपिन ता
करिवो विधिवान हरि तीरथ निपयां ना आपे हरिबासर सनमाना चलउस्ल अमतानु
उसितिं मनिवो हरि विमुषन को संग नुठनिवो करवन हीं सिष्यन समुदाई करिवो न हिं जे
हिं महं कछु जाई रहिवो वरजित व्यापार षोवादहिं करवन बहु ग्रंथनि अभ्यासहिं दोहा रहव
र चातुरी न किं बिन सहित सांति विन सोक सवैरै न आदर करव जन प्रिपविचरन लोक ४६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं: चौ: सेवा औरनाम अपराधन रहबुबंचायें साधवसाधंन निंदाहरिहर हरि भगजनकी सुनत
१२ नसरबरीतिपरजंनकी सकलबैरवरविंन्हलिखवतन पतिरवनिरमायलेमुरितमंन ना
चवगाउववाजवजाउव इंसतिंकरिंहउयतरिमाउव तरिलविहुरवचलवरहरियाछे अर
चेनपरहहिनजुत आछें सेवाभिरंतनकरिहुवछाउव जपविनती आलवसमगाउव घावप्र
सादपिप्रवचरनोदक संधवधपहिंजनहिं विनोदक मरति दरसपरसिहुवछाउव करिनीराजन
वाजवजाउव सेतासुननरहवहरिकीरतंनकिपेंकपाकी आस गुंनसुमिरयहरिध्यानपुरिमा
नवनिजजियहास ४७ चौपाई रंगवविनोदनसखाभाउसो आनमअरपंनकरवचाउसों जो
अपनेकहंवस्तुपियारी सोऊअरपनकरवसुधारी करिबोसिगरोतंमरेहितहेता राखिबोसर १२
वतिंसेलनिकेता ममसंवंधिनसेवाकरिबो विमयउचितउत्सवअंनुसरिबो कातिकमाघ
सोमाधवमासा सविधिनहैबोअनुउपवासा करिमूरतिपरश्रद्धाप्रीती सादरसुनवभाग
वतरीती करवसुजोंतिनसंगअभिरामू वसिहरिधांमजपवहरिनाम ज्ञानप्रकारसुनहुं अ
वमाई जानेसवभ्रमतमभिटिजाई सेता यहिविधिसाधनकरहिंजवतिंयेहोरनवजांन सो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उल्वहंनसंदेहपकरिवैनोसवनहूंसुजांन ४८ चौपाई अहमितनमनबुधिप्रांनसरीर इनतेंभिंन
जीवगुनिधीर जगतअसतसतजीवहिजांनै यहैविचारहिजांनहुज्ञानै करिनिहचैअंनभ
वजबहोवै जगमहंपरआतमकहंजोवै निद्राआदिजागरनअंता यहैअनिसनिरहेसंता
अंनुभवसुखबलहिसुखहिप्रकासा नवभवमेदसहजभ्रमनासा यहविज्ञांनमनिजंनजोरिभा
वैसतनहुप्रेमजेहिविधिउपजावै भयेविज्ञांनप्रकितछुटिजावै परामगतितवचंनरआवै ज्ञान
रूपहैतबतेहिंपाई जसमैनससोजांननभाई दोहा मोमहंअनुपमप्रेमजोपराकहावतिसोई
प्रविसहिंहियहियरतिसुखबसहिरससरूपाहोइ ४९ जबंनकहसोमवपूरजबमोरंहिनकोनास
पुनिविधिमिकरिहुवबपुलषतनकहियेकपानिवास प्रभुकरजवजगहुरमोलपमनचिंतसमे
त परमप्रकासीसक्तिनिजतवताकोमैहेत ५० चौपाई विनहुविज्ञानप्रेमउरहोइ अरतनजी
वकरिसाधनसोई कैसतईसकृपातेपावै कैसतकर्मपूर्वतेआवै सतनहुभक्तिमहंजेगु
नआहै करिविचारश्रुतिसज्जनकहैं पांचोकोसकरानिसोइहीं हुभगनउहेकरनिहिप्रभ
ति करनेमोहलधुपरमसुतंते मवडुपददलनसज्जननजंतै धंनआनंदहिंसारवरबंनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर: वसि करहिं मन रेख करषैनी लछिमन सुनि आनंद अति छाये वहरि कुटी नीनि उत्तम आये वसि हंडक
१२ वन अति सुख पावहिं केसमूलन फल लखु वन से आवहिं दोहा जागि रैन चौकी करैं लछिमन धनुष
चढाइ परन सेज म रस म सिय सोवहिं सुख सरसाइ चौपाई रोउ वे पुष धरे धनु वाना जो लषि रति
जाइ न हंना म हि सिया सो रति अति केसी सुष सिंगार मंदि छवि जैसी लखन सी प्रभु मेरे हु
लास किये विविधि विधि विविधि विलास ऐकसमे आश्रम अभिराम प्रिया अंत्रे नु जनत वैठेर
म अति वलवां निकलित अविवेका विररत वन तिनि लाचरि ऐका रावन भगिनि सुपनषाना
मा आइ गौतमी नट अभिरामा चरन चिन्ह की सुंदरताई निरखत उनके हितठिंग आई सीय
सहित निरखेउ हेउ भाई छवि सीवां सुषजन कमताई दोहा भई काम के विवस सो छकि छकि
देख अनय नेहिं छन सुरन मरन स लिंग निनिलि चरितम हुनय २३ चौपाई समुष राम सरमुषिनि सि
धारी सरिल षुउहरउसर पहिं भारी नलिन नैन प्रभु पतिं दृग जोरे सरि कच स्यां म वार पहिं जोरे १२
सरि प्रियसुष देई पलिखोरा रामवैन प्रियापालिके ठोरा सिय पिय पन सून वाढि पसूर हरे सरिजुत
न्याउ कुटिल उपुर म तरे आइ अपनो रूप ठ पारे कलाकर निधो देव हुं भारे सो तासि करर कोन तुम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केहिंकारन नरवपुजटामुकुटकरधारन फिरहुवनहिंजहँ असुर अलेषा लियेसंगतियसुंदरवेषा
सरलसुभावरामतवकहेऊ तेहिंउरपुनिपुनिमनविजनहेऊ दोहा कामरूपिनीसुंदरीवलअस
वकलनिअगार अरहिनिचरिनिमहंवडी असमनकरतविचार २४ चौपाई कहौरहौकेहि
कारनआई कहहुतुमहुंनिजचरितवुझाई रावनवहिनिसुपनषानामा कामरूपिनीअति
अभिरामा निजवलुफिरउंअकेलीवनमें तुमसुंदरदेषेमोमनमें मोसमनारिनतुमसमनायर
क यहसंजोगरच्योविधिलोइएक मैतुवसंवंधुनारिकरवाई फिरौंवनतुवसंगसुषपाई क
ह्यौरामसुनिविहंसिनिहारी संगहमारेअतिप्रियनारी सुंदरसीलवांनममभाई नासुवि
वाहकरवतुमजाई कौमातुरिलछिमनपहंगई वहुसमुझाइरकहतसोभई सोरठा किये
प्रभुहिंपरिहास कामातुरिपरनिसिचरी आईअवमोपास असगुनिहंसिवोलेलषंन
५५ छंद मैअहुंउनकरदाससनहुकेहिंभांतितुमसुषपाइहौ फिरिजाहुसुंदरिपुनरहिंकेव
रिहैजवहिंसमुझाइहौ तहंगईकहिजोनरहुचितवांनीवांनसिपदेरतिभई हरिअनजसोध
रसपनसोंलषिनिकटसीतानयपदई सोरठा कुपितरामरुषजांनि चलिआयेलछिमनतरत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

म

आर: लषीमहावलवान ॥ किये परम विकरालवपु ॥ चौपाई ॥ कुच हीरवसो की ईवदेषे । तेउनितंवनि
१४ रिवरसमलेषे ॥ नाक हरकुरीसमुषमारै । राजै अधर समांन अंगारै ॥ कमठी सम सोहति जेहि
टेढी ॥ नासीपीठि सरिस है पीठी ॥ कच है मसायरा है कैसे । सोहत उदर मृदंग जहि जैसे ॥ करिसी
नीरे ऊंट हिये सी ॥ लंबी ग्रीव ऊंसति है तैसी ॥ जे हिं धुनि गरदन धुनि हिं लजावति । चोंडर सादृ
सलोसजे हिं आवति ॥ नामै सरिस न तेजे हि केरे । षो रे सम न ते हि कांन चउरे ॥ कोधित लषन चार
वड जोरी । आसिनेलिप श्रुति नासा कोरी ॥ सोरठा ॥ लछिमन कोध कसान । निसिचर वंध आरंभ
मप रंग निनासिका कान ॥ अजगअवारो रैनरिचा ॥ चौपाई ॥ छुटे व्याकुलभागनमई । श्रवनरु
धिर सोघर पहं गई ॥ नेहिं आगेंरोवन गिरि परी । दुटके सरु धिर जभरी ॥ पूंछ्यो वर कर धीरज
धरी ॥ को किय असी दसा तुहारी ॥ करथ रित तवको न जगा पो । काके काल सीस पर आपो ॥
सुरयति जुन सव लोक यजे ऊ । यल जुत दैत समूह जेते ऊ ॥ सक हिं न सहि सग्राम हमारो । सो को १४
किय असहाल तुम्हारो ॥ सुर मुनि असुर दैत्य सवकोई । मरिहोंरन सुरयति हु जो होई ॥ बोली रा
कसि वंधु वचन सुनि । राम वंधु वल हि हे मोरे गंति ॥ दोहा ॥ सुंदर अति वल वानजग वंधु तरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नसकुमार तापससवेषतिधर्मवृत अस्वनिसवअगार चौपाई दसरथसुत हैं ते जहि धांमै ति
नकेलषमनषेन अस नामै अतिसेवोजल थ्यो उनमांही तेनके सम सुर असुर बहुनांहीं हैय
कसंगसुंदरीनारी तिनकिषपयेसी रसालमारी सुनतकोपि षरकरधनुतोल्यो चौदहजण
पसें अस वोल्यो आवहुमारिमगिनि अपकारी सुननैचलेसह असवधारी पंचवटीसुप
नसोआई असुरनिहिय देषाई सेउआइ तेउछकिरहे सरूपनिहारी तेरिंअंतर असयक
ह्यो षरारी सजुगजामक्तिहिरहुआई जबलगिमारहुं षलसमुहाइं छं. रघुनाथधनुषच
ढाइचलिनिसिचरनहिजिआउगये असकह्योरमहैरामननामकमांनवंसहिमहिमये तिय
संगलैफलमूलभोजननकरतवनमहफिरतहैं कहिसंगतपासिनधनुषसरधरिन्साइसुध
२ रमनितैंहैं तेसारिषि अपकारीनीचतुमजेसोजोनरिंभागि तोसबगिरिरोसमरमरि
जिषेसरउरलागि चौपाई तिनकहुंकरिवहुसरनपुकारे तिलप्रमांनप्रभुकाटिनिवारे
पुनिसरिहंसिनिजिचौदहवांना हरेचौदहसोजुण्णप्रांना सुपनषाजेनयानहिगई ष
लोसवेसुनावतिभई करिवलगननाच्योदलसाजी अगनिनसंगमररणगजवाजी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर चौहरससरसवलीयरजोधा चले आयुधन धरिकरिकोधा चढरिसेकपेअंनने आगे उदअनं
१५ हरिमरसव पाजे अलगंन अमित हांहिंने रिं कालंग गनेनमरविक्रमी विसाला करहनम
सोयेका करिसकरीं ममरनजरत लोक पइ जकरीं तेस करऊ सघघ दससीसकीधरहें सक
ल्सरथोक चाहेमी चड़ कालु हनिहसीकरऊं सचलोके चौपई मोसमवलीवासवहु नां
ली कहहुमनजकेरिंनेवमांसीं सुनिगरजन सव असुरनि अंनी हरषिनवलीवीररसठं
५ नी हरमुनिसिडुलघरंन आये सवेरामजेमुहिनमनाये विसिरा असमुजाहयमायी
मताकपालहसंगवहुसाथी दूषनसंगहरऊलचले सयेजदउनसानिनमले सोमितमट
पेषरसंगमांसी जिनहियकचहै यीठिंनजांसी प्रथुस्याम अंगुसेनागांमी अरमवसत
लिंगमनामी यरवीरालयख अंग हुरजे कालकमुखहुवोजजंनसरजे तेस मेघमा १५
लिमनरमालि औंरघिरासनहेंचरासि सरसंगपेन्नदससमट चलेयीररससासि चौपः
गरजंनिघोरसहरणचाका धजअवलोनमसमहिवलाका गंवंन वेगसोरयवंनयुवे
ड भूरिधूरिनमनोमअवेड चारु अमल अति आयुध चमके तेरसंनचहुंदिसि हांमिने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्रुमकैं पाहि बिधि चली निसाचर अनी ग्रहै मेघ सम धुमडी घनी कतो ग्रंनजसों एमसु
जींना स्यावहु वेगितान तंन चाना होंहिमरुउनयातभयाईन सुरंनसुघरदुम सुरंनउरपा
वैंनु देषहु लंषन हहिनहिंधोरा विनावाहिद हुंगरजनकठोरा सरसधुमनरकसकसमस
तैं वायग्रतिंचाफरकतलसती होस्त कुजलिंजेये विरंजगगंनकहैंहि घोरसंग्राम फरकत
राहेन बांउ मम जुक्ति है निसिचर ग्राम चोपाई नवमुष आति ग्रसंन्नमे देषौं नानें निजजप
निंहचैलैसौं जधपिसमरघनुमजीनेनकहैं नेदपिपासियपहिंलेजाउं गुसामहैं गरजंनिनि
सिचर घोर कठोरा सुनिपत जेरिनिसानिनिसोरा मसींचसैं यहलेनलराई सुसकहिनि
जयरसौरसधराई लछिमनसियपहिंहरीलैगये हरिनिजधनवचनठावजनमये कवचयुरि
रितरकसकरिवाधे सोहहिसोनयुषसरकांधे केम्मरकासिसिरजरासुधारे विचविच
सुमननकलीसवारे नमसुरमनिसुसतेनहिंयदे उविरधुवरमुषसुतिसुषमदै छं० प
विदुकांहियठिसुस्तेनयुंनिलसिमाधुरी सुसकहनहै रिपुसरसचोरहवली सुतिरधुना
धयेकहिंलषनहैं कहंराम कोमलगात कहंपविकठिन अंगनिसाचरकेहिभांतिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं: अवकरारि गो संग्राम परम भयंकर। सोरठा पुनि निज जन परम प्रनाम लख्यो सहित हरि वीररस
गरे चारु सरचांप काल हु कालै रहु जेंन चौ॰ नव सव देवंन की भै गरई रामचंद्र नरजित्र
१६ रुप भई भीम सो रजन सैना आई सगमग चहु दिसि गये पराई चषन रंजेन माधि स्सर
पवाला जिमितम बीच अनल की ज्वाला लषहिं राम निसिचर दल कैसे करि नजुथ्य
पंचानन जैसे पुनि कठोर कोदंड कोरा रह्यो भुवंन नै भरि सो सोरा भूषंन रयधनुज
त दल कैसे तरनि उदै घन मंडल जैसे लसि माधि सेन राम धनुधारी घरसारथि सो करयो
निसारी रघुवर सनमुष कहूरथ मेरो सो अति तरल तुरंग नियेरो छंद सब सारिव षरहिं
निवारि रंगि रंन रंग अति आतुर चले षरनहेंने वहु सरपधारे चले नमभार गमले पक १६
बरसव निपुसार कीन्हे विविधि आयुध कोपनें पुनि पिले रपुगण चठे जों ननप्रलेपध
२ नसम चौपन्ते तेरा सघरषा सोकुंदल मगरजे निगरजें निघोर चाप पीठि जंन चंचला
चमकि रही चहुं वोर सोरठा सो निर्दल मधि राम सो निरदे सारंग धरि जंन सकर अभि
राम लसहि प्रलय घनहिं गंजन मधि छंद हरि मुंद सब्द प्रसार जिमि तरनि उदै निहार लषि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छपै राम उतर लरकीन ससकार रजै धरि सोंराम जैनु भ्रातरवि अभिराम लरसनै लषि प्रभु भुजं
ग टंकोर रक्षि पसारंग जिमि सिंधु नदिन प्रवाह रैं मिलीं न सस्त्र उभार पुनि तजे निज सर
जाल ते चले जनु वहु व्याल फिरि चय लगति चहुँ वोर सरत जन राजकिसोर सरक
ठ्ठ परम प्रचंड मंडल भये कोदंड तेहा सरषे चन्तजोर ततजनन लषन नको उरेन धीर
लसहि मंडलाकार धनु लषिन परत रघुवीर चौपाई केकपत्त रघुवर सरस्चले विपु
ल हतन संन कै दलदलै कालदंड सम सर सिर धाये रतंन पुंष आनि तीषवनाये निसरिनि
कांडि सिचरन नें जाहीं सिबी सिषा सम औमसो सहीं धनुष ज्ञान धुज चर्म कृपाना वाँहें सम्रू
ष नवरमनि सोना प्यादें न तुरंग न रथ गज संडन उर ऊरु कारे वहु मुंडन लगे न लोकन
रावि करनी घलसरतरे चठे सरतरनी हरिसर विकल सैन मैं यागी वनजियन जि प
मि मधि चहुँ दिसि आगी जे कर कारिय रारखल जंरहि सिरकर काटि सवानिन का
टहिं छंर वहुँ कुंड गज विन सुंड रुंड प्रचंड नर धावन भये कोदंड धुनि आनि चंड सुनि
हरमंड हित आवन भये वैताल जोगिनि भूत नाचहिं ताल दै हरा सित हिये काली क

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर० एलउतालधाइनवडसुपराकरालिए दोहा भयविहंवलहंतशोषषलगेषरढिगसतभागि ल
१७ विदूषनउरवढति मैपरमकोपकी आगि छंद उंनिमासुलंगफिरिवलेवीर गहिसूलशक्तिअ
सिधेनुषशीर याषानसालपहिसहपास षलवरषिसखमयकिसत्रकाल आतित्रंथ
कारमोतुमुलजद्धु तवजनेरामसरपरमकुद्धु दिसिविदिसि मठेररिविरसिवान तेरि
समैनरहवैपरहिंभांन सवलगेहिंजांनतेहिंवानवरहे नहिंलषनचलावहिंनपतिनरहे
सवसखकाटिनिसिचरनमेदि सरनिसरिजांहिंछितिछेदिछेदि छंद धरधारकरउद्धा
र आगिनिजधारसरधनुतेंकढे निसिचरनिकरकरकेरहिंतवडंनरहटहिरैन आनंस्व
रे कोरिगिरिसिरकेइनावकउरकारिउररउररकोनरे गजतुरिनसुंडमुंडरस्नहुचरन
कारेवांनरे सोरठा किषांजद्धुसमिराम रनआंगनआंगनछवी विधिसालाआति
राम जगतवनेवेकीमनहुं चौपाई कोधिनरंनमधिरधुवरऔसे नपतमिथुनगत
घुवंनजेसे पांचरजारत्रजेमरपारी पहुपोनतुरनग्रसंसिग्रचारी तेसवलमरहिंति
राधिअमरले पठिसहलनसिलाइमवरषे हरिहंसिसकल आयुधनकाटे मरितत्र १८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेकभुजासिरछांडे ॥ पुंनि निरखि विपित निज सैंना धायो सहंनयो जननि वैना निज सर रघुव
र सर ननि वारी लियो मुहि निज सस्त्र न मारी हरि सर काटि ताल धंनु काटयो छंनि सत
सिर पुंनि रिपु छांटयो तुरत दूसरे रथ चढि धायो निधंके रघुवर सनमुष आयो ॥ छं० ह
रि नीन सर सरि तजे रथ सुत्र धनु वर निरतन रहि गये लै पर रथ धायो क्रोध सो सो राम सो उकार
त भये भगवांन सो विनवांहु किय पुंनि प्रांन विन सो महि पर्यो लषि राम वांन प्रताप भा
री देव दल जै जै कर्यो ॥ दो० वे सेनापति सस्त्र धरि कोपित प्रेरित काल ॥ अस्थूल सिप्रमा
थि पुं धायो मत्त कपाल ॥ चौपाई ॥ तिन के राम चतिपट रुव कीन्हे सर वरषा करि पूजंन
कीन्हे कास्यो मत्त कपाल कपारा वहु सर हनि प्रमाथि महि डारा अस्थूलाक्ष श्रम
रि नीरा पंच सहस्र असुर हने उपुंनि वीरा सर पुंनि चारत भर निप्रचारे धाये नेव हु आयुध धा
रे लिये धारि सर वरषा कीन्हे निज सर राम काटि सर लीन्हे वरहे के सिर वर हे वाने
कारे रिपुर करै वषाने पुंनि कोपित धाये छत निसिचर सव वकि परामति न हिं हनि
सो सर वांन सहस्र रहि हंने सहस्र जारा ओ निनन सो सहि वहु धारा छं० ते निरूधि रस रि ता सि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भार:
९८

ज्ञारवै सरिके कृतिमुखनपरे हेउ कुलमारी डोलनिसिचर अग्र कुंभकरहिं नरे कोडहिं
न हों हिं सबही सजोगिनि गिडतट आनन गिरे जन चोंयसो से सवार अगनित खेलित
रवंसीर रहे हेत मजाग हरिहिं कूड बढ कुररहिं धायल वीर नरक सरिस तरें की अवं निज
ध करि किय रघुवीर सोरठा सोभा सिंधु अपार धनुष धरे संग्राम मे ऐक राम सब कुमार
मारे चौ हस रस समर चौपाई ठाढे ती निरखें रन माहीं रघुवर ति सिर धर सय नाहीं निरखि
राम बल धरस मग हाना रोके उन सिर अति बल बाना देखहु मैरे ख्यार अवधारहु रे
न मरे राजकुमार हि मारहु मो हिं गिरे तुम जु हिं करियो जीत मंसा आन दउर भरियो
वर प्रेरित सों कोधित धायो रथ पर गिरि शिखर गरंब मायो गरजि बान वरखन बहु की
न्हो हरि धनु धरि आगे चलि लीन्हो कोरहिं जद हेउ बहु विधि बानन मानहुं त्रिपुर अ ९८
सुर पंचानन उरसा रहित निसि हर सुर न हन करहिं विविधि मंडल रंन जंग नछ रसे
उनरहिं अति बल बान बान अनेकन भमंडलम रे सुर हन रहित कित कि मरम आनन
वीर नायके रंग बढे विसित रनै चैतो रतिन की फौध हरि माल हिं लसे जं नु नील गिरि के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पायेंन ञ्रहंहिंप्रवंगमजातिलभायेंन लंकाहिंकहहुंउपारिलेआऊं कहहुंदीपजुतसिंधुड
वांऊ सोषहुंकहहुंउदधिकोवारी पारटहुंमेरुआदिगिरिउारी टारिदसाननवरनलेआऊं
पउमपहुपसंमप्रभुहिंन्चढाऊं गहिल्याऊंदसकंध अभागें वालिपहढवैंरापहुंप्रभुआगें
कहहुंसीपल्याऊंहनिनिसिचर कहहुंपवालिलेआऊंहातउर जोमवंतकहंहंतुमसवलायक कीन्हें
उसोइजोकहहंरघुनायक छंद सुनिवचंनहरजिनकपिनतेसोंगीरपरवतपरगयो लहिंभीमक
पिकोभूरिभारा भूधरहुंकंपितभयो अतितेजवंतहिंअरुनमुखथंनधंनलग्नरविराजई जनु
उदेगिरियरउदेरविरथजुतपताकालिंघाजई १२७ दोहा जैजैजैहंनुमंतकीकहंहिंवरषिसुर
फूल वहंनलग्यौहरषितहियेंत्रिविधवायुअंनकूल १२८ रामलषनअरुजांनुकीसदांकाएहिं
कस्यांन तेहिभयकवहुंनहोतिहैजोसुमिरहिंहंनुमान १२९ सोरठा लषंनजांनुकीराम सदां
वसहुंमममनअयंन आनिदपालसुषधांम करहुंपारभवसिंधुतें १३० इतिकिस्किंधाकांडस
मामश्रीमहाराजकुमारश्रीबाबूसाहेबविश्वनाथसिंहजूदेवकृतसंपूर्नभाद्रसुदि ६ सं०१९०७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोप वज्र तिल मार्यो भगन भई हँनवां मनु म्हारी गिरे भ्रित कछु इव सेल मझारी लषि सुत द्धं लाल
वा शरिस कीन्ही सव की सांस वंद करि लीन्हीं दोहा मरि तन ब्रह्म अह चि सुति रु औ एव कि कलस
वदेव सुवं समीप आवत भये जांनि पवंन को भेव १२४ निज निज अस्त्रनतें अभै करि छंनिर्
भयरांन स्रुषजे अजर अरु अमर करि नाम कह्यो हंनुमांन १२५ चौपाई पुनि कहें राम भक्त
यह हैहै परम हजन त्रिभुवंन महं पैहै असकहि निजनिज भवनहि गए पवंन हु हरषि
तनिज मन भये पवंन तनय हुवं पवंन समाना हंमन क्कु रराघ हु अवप्रांना परम प्र
कंमकर हुं जान अव लषंन हेत उन्साहित कपि सव सुनि हरषित उठि हंनुमत वीरा भयो
महधराकार सरीरा देत अनंद कपिन हंनुमाना पुहुमि पटकि लंगूर जम्हांना हंनुमत पर
उर आति अंनुराणे स्तुति करन सवै कपि लागे वावंन संम वाढो वषु देषी स्ताववरजि
तकपि भये विसेषी दोहा कंदि जु ध्यनतें वीरवर रह्हन सी सन वांइ जोरि पांनि वोलत भये रा
म लषंन उरलाइ १२६ चौपाई दिसा लता घन पल वराजें उइ रवि सासि प्रसून फल छाजें प
हनमन तरुनी चेमम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि॰कां॰ ।। जाज दश वीश गवांक्ष कहं सरभ कहुं जोजन तीस चालिस ऋषभ पचास कहं गंधमादन कहुं कीस १२१
२० जोजन साठि मयंद वताओ सत्त द्विविद कहुं निज जवगाओ करु हुं खेन मे असी सिधे हों जामवां
न कहं न बेजे हों हरि जव वाहं न वेषरि किं कीन्हों छिति इकइस परदछिन दीन्हों जरा ग्रसित
भो रुष मो लिंमा ही उदधि नाकि वेला पक नाही अंगद कह्यो नाघि मे जैहों तिय फिरि अ
हों धो नहिं ऐहों जामवंत कहं तुम हो स्वामी तुम कहु पठये जगवद नामी जदपि समर्थ अ
हहुं कपि नायक तदपि पठाओ व हमें न लायक अंगद कह्यो तौ पुनि का कीजे फिरि अन सं
न द्वत अव करि लीजे दोहा रिक्षराज कहं विहंसि पुनि पुत्र न जै अकुलाइ करन हार सव
काज को देहैं मही वनाइ १२२ चौपाई अति प्रकांन प्रभु ध्यांन धरि बैठे जहं हनुमान धीरे धी
रे रिक्षपति चलि अस कह्यो सुजांन १२३ चौपाई तजत भ्रांन अंगद अकुलाई महावीर कस रहे
चुपाई हर सम बल अति वुधि हनुमाना अंगद के सुग्रीव समाना महा अजे तुम पवन कुमारा ॥
राम काज हित लिय अवतारा वालक तुम फल जांनि दिनेसें धांन हेत तन मकीन मचेसे निकट जा
त अनि आतप लाग्यो महावीर तव हं न हिं भाग्यो सवि तरुं डरि वास वहिं प्रकास्यो काी अति २०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दसोंउरकरिकछुकविचार तेनापरजुगईसकोकहैहैंअबअवतार काननऔहैनारिजुनरउरनम्हौंमिलभा
र चौपाई तिनकीनारिनिसाचरहरिहैं तबप्रभुकपिपतिमीतठिकाहैं तिनकेंकपिपुंनिखोजनऔ
हैं तेसंपातितुम्हैंमिलिजेहैं प्रभुतियकीतुमसोंसुधिपेहैं पसतुम्हाजामिनवऔहैं कहिअसमु
निमोहिधीरधराये लषकुंपक्षकोमलजंमिआए पुंनिकहहनुमदेखिहौंसीताकहं हैसंदेहनसे^
कौयहमहं जासुनामजपिअनंदअगारा जीवहोतभवसागरपारा तिनकेकपिहौतुमसबनाता
यहसमुझहैकैतिकबाता असकहिकपिनकल्यांनमनाई उड्योगिद्धपतिपरगहराई दोहा॥
गिद्धराजनिजदेसकहंगयोरामउरराखि इहांकीसगंनमोहसोंरहेंवैसंईमिभाषि चौपाई कहं
लोपाहिप्रसंसिहिंभाई प्रांनराखिलीन्हेंउषगराई अहोहिंजटायजेठयहभ्राता नहिआवरज
नाहयहबाता सिपदेखेनकारकरहिंविचारा लषहिंमहोदधिमहाअपारा कहेंअंगदतुमसब
बबलआगर कहकौनाकिहैंकोयहसागर सिपकीहधिलैआवहिंजोई सबनमांनहानाहै
सोई सुनिसबबंदररहेचुपाई लषहिंपरसपरमुषहिंलकाई पुंनिकहंअंगदजेहिंबलजे
तो कहैहमारेंआगेतेतो निजनिजबलहिंकहंनसबलागे दुहंभांतिनेअतिभयपागे दोहा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किं॰कि॰ ११६ नहिं राखसि निरखसि न सीता बैठी है कसअंगस भीता अंतर अगम समुद्र सन जो जंन मार
१९ गषलवि सराम न भो जंन हिरघटि हिगीथकी होई नातें कछुं हसि यहि मैं जोई परीपाल है अतिबु
नराबंन सुरहुं असुरकर मद हिं नसाबंन अतिजब अमित मतिमान नहिं होई ताकें सन जो जंन जो
कोई सो सियदेषि फेरि फिरि ऐहैं सं जन न सुजस जगत महु पैहैं मरजेउं मली अंनुज लंना कहं
त्रि दुविपस जोर नहिं मो मरहं नातें सियको उं आ वहिं ऐसी बलहिं मारि है राम विसे को दोहा
लग्यो कहं तनि आपनि कथा ठरपिन नृ कैं संपाति येक समै दोउ बंधु कर बेगसरा ल्यो ज्ञाति ११७
चौपाई नातें बरहं तिलें नन भ अंना उउ वेग सों दोउ बलवंता जरन लग्यौ रविनिकट जदाई
बंधु विलोकि दसा उर आंई तालिंबचा वन न ममपर जरे कछु है अति विकल भूंमि गिरि परे कुं
मराधि ननी निरि वस महं जाग्यो विकल चरहं कितजो हं नलाग्यो लषि मुंनि आश्रमत हं मेग
यो मुनि स चंद्रमा सो किन भयो गदगद गर भरि लोचंन बारी कहं किमि मै अस दसा निहारी
मुनि सों कहि विरनां न नहिं गयऊ पक्षविहीं न दुषित है रहेऊ मुंनि दयाल पंनि कह महि भांती क
रहुं सो कह नारिं तुम संपाती दोहा कौंन ज्ञान उपदेस मोहिं छीनि लीन मोभार पंषि बोले मुंनि मो १९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गिरिदरिमासवितासा अजहुंमरिकाहुंषोजनपाया मोरिहिनपसवमनकियठीका नातें प्रानसंनव्रतहैनी
का कुसविछाइनहंव्रतकरिबैठे सिगरेसोकसमद्रहिपैठे गिरिनेकट्योगिद्धपक्षधीरे हरषितवोल्योव
चंनगभीरे भारी कापिअनसंनव्रतलीन्हे विधिवहुदिनकहंभोजनदीन्हे वोलेसवकपिसनजडेराई
षाहेसवनचहनयहभाई हमसवरामकाजनाहिंकीन्हा मरनहुंगीधहिंकरविधिदीन्हा दोहा॥
होतिजराईगीधसमकाहुकीनहिंभागि जियनरामरागीरहयोममम्योरामहितलागि ११८ चौ०
जियनराजिपहिनकीकीन्ही मरनपरमगतिसुषसोंलीन्ही कहसोगिद्धप्रियवानसुहाई॥
अहहिंजटायुमोरलघुभाई जरउंनषचरिकहहुंसव भाई रहयोपरमप्रियमोहिंजटाई सुर
निकेहोमैंवचनसहाई तुमकहंदेहोसियपहिंचुनाई उठिअंगदनाकेढिगगये सवविरतांत
सनावतभये सोसुंनिमरनजटाईकेरा हरषितसोकितभयोघनेरा नरलोमाहिंलेचलउं
उठाई देउंतिलांजुलमैंनिजभाई सुनिकपिनाकीअज्ञाकीन्ही गीधतिलांजुलिजलसरदी
न्हीं सोरठा नेहिंस्नानकराइ ल्यायेकपिसपलतहीं वोल्योतहंषगराइ सुनहुंवीरसवममवचं
न दोहा गिरित्रिकूटकेसिषरपरनगरीलंकानाम मधिनाकेअभिरामअतिएकअसोकअराम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि०किं० षछइ जैसहिंकरि परधाममहिंगइ तेहिंछुनआयेबाहेरकुंदर जहांनैनबोलेसबबंदर सिषबोजनगैंनिक
१८ ठिनबलीमुष रेठिमिरुनजरलगेकरनदुष अंगदकह्योनपाईसीता ममतोमासदरीमहंबीता नेकौं
नपसांसैंननरिंकीन्हो हमकहंदइउदुसहदुषदीन्हो बालिवेरअबमनहिंबिचरिहैं जातहिंकपिप
तिहंमकहंमरिहैं उभैभांतिबिनमरनहिरीन्हें करयौनजावकाजविनकीन्हें पतनाकहतिनैनभ
रिआए रोवनकपिडुंआइसमुझाए दोहा तजहुंसोकजुवराजतुमबसियदरीपहिंजाइ दुरगंमझ
तिपहुगोपिहैकाकरिहैकपिराइ ११२ चौपाई सुननतबचंनआयोहंनुमाना धीरबीरअरुपरम
सुजानां अंगदसोंबोल्योअसिबांनी तुमकाहेकहंतजहुसयांनी ऐसीसिषजेतुम्हहिंसिषावहिं तुम्ह
हिंत्यागिनिजनिजगृहजेहैं रामबांननतेंनालिबचैहैं करैरामसबजगतनिपाता हैकंदराकोनपरु
बाता कुलमहंतुमकहंपुंनिएष्यअतिहो तुमकोहिहैजकरतअसिमतिलो पुंनियहपैकहुममत
जांनो एमरिंपारब्रह्मकरिमानो दोहा हंमसबजैनकेरासहैबोजहुंसहितसमाज सोकछांडि
धीरजधरहुंसिदिहोइगोकाज ११३ इंमिकहिउजुवराजसंगगयेसिंधुकेतीर गिरिमहंदपरठाढ
हैलष्योजलेराधिगंभीर ११४ चौपाई चिंतामगनबैठिपुंनितहां करैविचारसीपधोकहां दूंदन १८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्वद रसंनकारन वरष हजारंन करि तप धारन रूपपरी हेरामहरी जै अंतरजामी जंत्रअंतगामी मोप
रस्वामी कृपा करी जगकिजिभरी जपथ्यापकवेत्तअदिपरेस हरषिमहेस नाम ररै जंनसोक हरैं ॥
जै अलष निरंजन जंनदुषगंजन मुनि पदकंजनजा लपरै मनमोदभरैं निजभक्तिपसारन कार
न तारन असुरसंघारन रूपनसे मुनिमनहिंवसै भ्रमकरि विज्ञानी तजि गुनषानी निज वपुजानी
दुनिहिंफसै तहिं सुंदरसैं जेहिं वरनत नारद बुद्धिविसारद संनकहुं सारदगति मनकी अतिरह
नियकी अवरजयह भारी भयो षरारी महंनिहारी सषछविनकी सुषमा हहकी १०८ छंद पर
गासी सुषरासी पामुसकांनि लसैं धंत्रधारी सुषकारी हियपहिं वेषवसैं करिवांनी सुवसांनी
दै कर जोरि रही लषिरामै अभिरामै सो अनिनेह नहीं १०९ हरिकह भस्वावैं जो जोहिं भावै मांग
मां गुवरभागवनी हरषितसो नारि कहि सिविचारी नाथमोरि हैं यह विनती सव भषंनकीन्हे धंनस
रलीन्हें पहिरि पर अनमोल लसैं गुनसीयसो होई सुंदर भई आपुहमारे मनहिंवसै १९ दोहा अति
कोपाल करिकै कोपारी जैं भवदुषषोर करहुंसंगन वृजननकोंहियें प्रेमफरलोइ ११० औसे होई प्रभुक
रसो जाइ वदिका धांम तहंतपकरि तेपाइहें मनभूप अति अभिराम १११ चौपाई गेत हुं परपरि अतिषु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि॰ कि॰ १७ भीजे कठन विहंग अरु मानी मतिशेष मयहि गुलांम ज्ञानी अतितम स्वेद सहद दुष पाए दृश्टं जोगतु वेठि
गलो आए अब तुम कहहु आपनो नाम कौहिहि तकरहु तपहिं अभिराम आवहु जलपी करि फल भो
जंन मै कहिहौं तव सकल प्रयोजंन दोहा अमिय सरिस जलपानि करि जैसहि फल कपि षाइ नाइ
सीस नैठत भए देवी दिग सुष पाइ १०३ सो कहै हेमा गंधर्व की स्वयंप्रभा मम नाम मुक्ति हेत तप काहु मे
ध्यावहु निसि दिन राम चौपाई हेमा की हौं सषी पियारी सो करि तप परधाम सिधारी चलन कहीं
मो सो असि वानी नरलोक तप करि रिकै सयांनी त्रेता लेहुं हिं प्रभु अवतारा भंजन हेत भूमि मै भारा
तिनके कपि निषढूंढन जै है तेन वतु मरे आश्रम ऐ हैं तिनहि सजि सत कार हिकीन्हे पुनि तै जाइ
दरस प्रभु लीन्हे पद परि अस्तुति करि सुष पाई बसे राम के धाम हि जाई अस कहि पुजंन व छवि
धिकारि करि सो बोली उर आनंद भरि भरि मै चाहौं अव देषन रामै तनघंन स्याम अनंद हि धामै
दोहा जा दुगुहा के पार अव मूंदि नैन कपि धीर जैसहि कीन्हो सव निसो गई जहां रघुवीर १०५
राम लषंन सुग्रीव कहं निरषि परम सषु हरि परिदछिन करि कर तिन्है नमस्कार सो भूरि बोली
पुनि गदगद वयंन तप करि दरसंन हेत मै आई तुउ पास लौं हे प्रभु के पानि केत १०७ छंद मरह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सननाये दक्षिणअंगदसंगसबबंदर ढूंढनलगेगएलंनगिरिकंदर भारीयेकनिसाचरदेष्यो तेहिसबकपि
पिराषेनकरिलेष्यो कीनक्रुरुकारिमुष्टप्रहारा मारिमारिपुनिकियोविचारा एवंनंनतिहिकारिऔरे
काननदूंढहिंसोपविकलसबप्रांनन अतिप्यासेतरुषांहीजाहीं सूषेकंदअधरमुरझाहीं हारि
लेनानिदरीयकदेषी कुढनभिगेषगजलतिहिबिसेषी हनुमानतिहिआगेंकारिलीन्हा सबकपिदरी
प्रवेसतिहिकीन्हा छंद गहिएकयेकनजांहिसबकपिगुहामहंप्रविसतभए अतिअंधकारअ
पारधीरहरिनामहरिपारलिंगए तहंलषीअनुपमबागसुरतरुसमहितरुफूलेफले सरहषतम
षंनवसनभोजंनधरेतहंबहुविधिमले सोरठा कनकसिंघासंननारि प्रभावतीबैठीतहां ध्या
वतमनहिंषरारि परिहैंपदजलकंजनके १११ दोहा सुनिषरभएदेवीजगीकपिसिरनाएना
हिं बोलीसोअतिप्रीतिकरिहरषिकपिनदिसिचाहिं कांकेहौतुमदूतनसबकौनतिहारोकाजके
हिंकारनयहिआश्रमहिंआएसहितसमाज ११२ सो छंनि कहहंहनुमानसुजांना दशरथतनयरा
मभगवांना पितुसासंनलहिंबनकहंआये षलनमारिमुनिपालतभए तिनकीप्रियाचोरिको
उलीन्हीं तवहयोढूंमित्रताकीन्हीं ढूंढनसियकहंहमहिंपठाये षोजिततृषितगिरिहियहिआए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किं॰ किं॰ जाये आवहिं निछोरमनिमैंगिरिबेसा फेरिपुनिकुरमनकरदेसा पितृलोकहैंतिनकेंआगें तहंनहिंजा
१९ पडुंसवभयपाआगें फेरिसुषेनहिंसैनपकरेउ तावहूंकपिसंगकरि कहेऊ ढूढेउवनसरिउदधि
तनाई मुरकेहुंस्याचललेजाई सजवलिकहंउ तरहिपठाये तावबंदरंनसंगेलगाये उत्तरउद
धिहुकेजोउत्तर तासुनामहेसोंमसैलवर सोरठा जरुनेसैलदेषाइ दृष्टिफिर्यौ तहंतेसवै पुनिकहं
रायउठाय सनहिंसेनसवमोरमन १७ दोहा विनढूढेजोसीपकेऐहेमासबिताइ सोममकर
नेवहहैंकहोनिकटरघुराइ १८ चौपाई पुनिकपिपतिहनुमनहिंवोलायो कहेपोवीरतुमअति
वलपायो मनसमजवसवसासुप्रवीना वुधिवलअतुलतुम्हैंविधिदीन्हो हमरेहितवासी
तुमभाई ढूढेहुंसियकहंमनहिंतगाई देवदनुजनहिलरिवेलायक गतिसरभवनवहंहंस
हायक ऐसकहिरामसमीपहुंआयो रामहुंपुनिहनुमनहिंवोलायो निजमुदरीदीन्हीसाहि
जांनी फेरिपठायोकहिसुभवांनी हरषितगवनेउपवंनकुमारा रामकाजकरधरिसिरभाए वे
ठरामलषंनजुननीती कहहिंपुरातनकथापुनीती दोहा सहरनसैलनदनदनदिनसिंधनदीपनि
वेरि तीनदिसंनकेकीससवफिरिआएसिपछेरि चौपाई देसदेसकेवीन्हलेआए देसुग्रीवहिंसी १९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स २२ चौपाई सुनिकपिपतिअंगदहिपठाये तिनसपासजुतसवनिरिकासे सुग्रीवंउंकहहि
पुनासेन आपेसवकपिलहिंममसासंन बिनबारीअरुअतिवलवांना नहिजिनदानवदे
नसमाना जाहिररनमहंहैंबुधिआगर जीतेंश्रमनाकहिसवसागर नानासरिनिगिरिनि
केवासी छिनिपरदछिनमांहंविलासी तेअसंषिकपिगनयेआये अहंहठि आपकारजमन
लाये दीजेसासंनजोरभुनेंदन करेसवेसौंरईकरिपदवंदन सुनिश्रीरामकह्योमुसकाई
बोजिसीयसुधिभायहिंआई दो कोहिंदेसमेराषीहसाननपरमप्रियममजानकी कहंअहं
हिजाकोतासजाकोंत्रासनहिंनिजमोंनकी लहिसवारिलैसंगफौजकारजउविनजोइसोइकीजि
ये यहिकाजमेरौतुम्हेंसांमीकपिनसांसनदीजिये ९३ सोरठा विहंसिकह्योभगवांन सववि
धिकारजमहनिरत होहरसुसीलसुजांन लछिमनसंमहुमेरेतुम्हें ९४ दोहा विनमजुथ्यपे
बोलिकैहरषिकह्योकपिराउ सकिसविनासंमलसकपिसंगलैसरुवजाउ ९५ उदधिनाकिगि
रिदीपकुंनजहंलगिरविपरकास जलपलदूटेउंसीपकुहेंअरुराखेंनकरवास ९६ तसेंकपीसमलो
बलवांना अंगदसंगदियनपानिसुजांना तिनकहंदछिनदिसहिंपठाये नलकेगिरिसमसीपव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि० किं हैं अष्टजाम हैं सहस कोटि भट भीम संग जे चलत करहिं गिरिवर न भंग कोलास सरिस पर हनूमान
१५ परसमन अहै बल बेग ज्ञान अति बली नल हिं देषियत होरि संग षै कलाष कपिसन करोरि पन्नस
नदरीमुष कपिन नाथ बल ज्ञान की सदस कोरि साथ मरुल सत नील सेनाधिपति संग अमित कोस
सुन सील सजि पुनि अमित पदुम आये कपिंद्र दल रेहबल ऊं सेम अहै इंद्र ४२ दोहा अगिनिरं
म अरुसर भऊ कुमुद आदि विरुद नाम कामरूप अति वेग हैं सबै महाबल धाम ४३ समदिप नव
षंड के आइ आइ कपि नाथ सुग्रीवें हि रघुनाथ को सबै नवावे माथ चौपाई महा भीर आतुर न नहिं
पावहिं नवहरि हि जैसी मन ज्ञावहिं कोउ आकास हिं जै सिर नावहिं नमसकार ध्वनि कोउ सुना
वहिं सिगरे आत्म निवेदन करहीं निरषि राम छवि छकि सुष भरहीं कपिन जुथ्थ पं नलै कपि
नायक कहुयो जोरि कर प्रभु सब लायक इन्है सहित मै अरपों निज तन सुनि रघुनाथ भये प्रस
न्नमन हनुमत ह्वादिकेंन सोंसुग्रीर्व कहें उं फेरि अति हरषित ही जें आएसव कपि केंकोउ
नाहीं आवहुं देषि परी छिनमाहीं जुद्द जुद्द करि जुथ्थ कपीसा दीन्ह हाजिरी जहं हरि ईसा ॥
दोहा पेक हिं नन पेक हिं छन हिं हरषित मासाई स कुशल मल्ल कीन्हीं सबनि वेंचेन से कीकी १५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमहा बलपासे कोरि हजार कपिन संग आसे नार रुमा को पितु पहुआसे कुंज किंजल कर संग न राजैं
उखतरु नारक सम हिं विराजैं संग सहस कपि अतिबल धामा हनुमत पिता केसरी नामा संग कपि को
रि सहस मुख कारे पनस गवाक्ष गिरिवर तन धारे संग रिस है कोरि हजारा धूम्र रिक्षपति बल हि अ
पारा दस करोरि कपिन ट संग जाके आपें पनस मराबल याके छंद गिरि कनक सम कपि पंच
कोरिक संग गवै विराजई संग तीस कोरि हजार अतिबल दरीमुख पहुछाजई संग कोरि कोरि
हजार दुविध मयंद अतिबल ज्ञानये कपि तीस कोरिक संग गज हय रिक्षपति जंमवान ये ८७
दोहा इनके संग हजार कोरि हैं रिक्ष मराबल ज्ञान रिक्षराज अतिबली बूढे सुर हज्ञान छंद
पधरी कोरिक हजार सत संग कीस आयो सुगंधमादन कपीस पहुमन नाम को विदित
वीर सत कोरि लिये संग समर धीर सो संख कीस पहुमन हजार संग लषिय वीर बाली कुमार
पितु सदिस बली अरु वयन वीन करि कृपा आय जुवराज कीन दुतिनषत संग कपि कोटि पं
च पहुनार वीर डर नाहि रंच बारह करोरि कपि विराजमान मधि हों निसंक पहइंज्ञान संग न
रुन नरनि पहुवीर रंभ संग अैतुल सक कपि जैन बंभ है कोरि संग दुरमुष हिं नाम पहुचल न जुरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि॰ कि॰ मिलीसियपविलासहैं अचरजनचरषवइंद्रकोनिसिचंद्रकोपरकासहैं जिमिहरनरविमकरनतिमितु
१४ मसोऊनारि अचरजअहै जोपाइहुमसोमुन्हिरषेराजानहैंपहद्दछमहै सोरठा तुमसोमीतहिपाइ जि
तिहोमेसवरिपनको करिवेजोगिसहाइ तुम्हैपेकमेरेअहो दोहा अपनेनासनहेतपहरावनति
पहीलीन लोटिहैंसठरंनभूमिमहंममसरसिरविनकीन ८४ मारतंउमंडलमढोतेहिंछत्रकृउं
कितधूरि अंधकारदिसिविदिसिभोआपेमरकटभूरि ८५ चौपाई लागीउगनगिरिनिजुतधर
नीचढेगजनिजिमिडोलातिनरनी ऊँनिआतिवलतंनमनरूंपहारा विविधिरंगअरुविविध
अकारा तीक्षणनषअरुदंतकराला थोनीकारिउरसांउविसाला कपिअसंषसोछितिसव
छाई औरौसेननिमिषमहंआई कोटिनपदुमनकनरनढिरे जेकवहूंरंनमहंनहिंफिरे तेअ
नंतजुथ्थपऊंनिआए दिसिअरुविदिसिगंगनमहिछाये ऊंनिआपेकपिभरेउमंगा तरुणान
रविसंमजिनकेरंगा कमलकेसरहिंसंमकोउराजहिं सेनससीसमकोउकपिछाजहिं दोहा॥
जैसेवानरअतिवलीसंगदसकोटिहजार धीरवीरजुथ्थपलसेंसत्तवलिवलहिअगार चौपा॰
कनकाचलसोजाहसरीरा कोटिसहस्रसंगकपिभीरा तारापितासुषेनसोलाझो वेदकनिये १४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वांइ हरषिनरहिसमामिलभयेनिजनिजजुथ्थनजाइ चौपाई सुग्रीवकहुंप्रभुपायेंनपरे रामहुंमीतप्रीति
मनहुंभरे पूछीकुशलहरषिहियलाई किपोउचितरजंनवेठाई कहुंसुग्रीवजोरिकरवैना लषियेआ
वतिआपुनिसेना नीसकरोरिसामकपिघोरा षंनषंनसमआवनुसहिजोरा तमहिरन्यसरूपजेपे
हैं दसकरोरिस्याचलकेहै विविधिवरनकपिकोरिलजारा इनकोहैकैलासविलारा कोरिसहस्त्र
सहसपेवंदर आवनवसहिंरेमांचलकंदर वरनअगारजेकोरिलजारा आवनकपिजिनविं
धअगारा छंद पेछीरनिधिकेतीरवासीविपुलषईनभावहीं गिरिसरिनिकेकपिओरनम
रूपवकालआंमुनतावहीं पेउडतचासोवारनेकपितरनिमूरनआवहीं जंनजांनिरलमेंगं
गनजरुफलषियतअनिरुषयावहीं ७९ वहुजुथ्थनानावरनकेकपिभीरपावरषंनभरी॥
जेगएतेजुथपंनवोलावेंनजेऊसवआएहरी सवदेसकेसवचीन्हलीन्हेंऔषधीफलमूलहे॥
देकहेऔ आवनसवैकपिजेंसानसमुदनिकूलहै ८० सोलैकहौसुग्रीवंआएदूतसवनिचलाइकें
प्रभुकालयोरहिंआपकेढिगवीरपउंचतआइकें सुरहवंनचौसठिकोकिकपिपातिकामरूपहिं
जितलीसमपवंनवेगहिंसिपहिंवुदिहेवचिहिनहिंकहुंकीयली ८१ मिलिरामप्रभुनिसुग्रीवंकोकहें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि॰ कि॰
९२

आतुरधावतलसनमले जैंउपऊँनचलायेचहुंरंग धाए धंनछविछायेजरलचले अथवां गिरिराजसुता
केकाजकरनसमाजजवहिंभये जैसेनहंगिरिवरनेवजेंलहिवेरनिरखंनहिनहरगंगनछये सोरठा॥
धुनि सुनि दसदिसिहेरि हरषिकह्योप्रंनिपञ्जंनसन लषियेनैननिफेरि येआवहिंकपिजुथ्यचहुं
चौपाई येकपिउडतअहहिंचहुंजोजंन जैहैंसिगरेसीतहिंषोजन चोंनीसनननपवंनसनकेरी लषि
मनउरभैलाजघनेरी सुग्रीवउंपुंनिआरघपाघरिय आसंनदेवहुविधिरजंनकिय मिलिकहंपुं
निमेदासतुम्हारा रसाकियरघुनाथउदारा रामप्रभाउकाजसवसारै हमकहुंहैसहाइजसभरिहैं॥
लषिमनकह्योनीतिकीरीती मैजोकह्योछमउकरिप्रीती टिकेअकेलेरघुवरवनमै विरहविक
लहोवेछनछनमै जैहोमेसोचितममजोऊ चलिरोमहंकह्योसुग्रीवं दोहा एकोहिंरयदोजवदे
वाजेवाजनभूरि रीछवांनरनसंगलेप्रभुपहंगेसधघूरि अंगरहनुमननीलनलओरोकपिपर
धांन छत्रचमरआदिकलियेजिनजंनसैलसमांन सोरठा वैठेजहैंरघुनाथ सहासारसुंदरसिला
मरेविरहकेगाथ विहसतनरवरवारिजवदंन ७८ अंगअंगसुछविउमाह लषिवउरसासिंधुस
व राममिलनकीचाह कपिपतिरघुहरिहिंतजो दोहा वंदरहनुमनआदिजेकछुचलिसीमन॥ ९२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इनसो हाई दोहा साधुकल्पानहिं रूपनुवें भक्तवसलभगवान प्रियदेवरममभागतें आयहुं कृपानिधान
चौपाई भक्तभनम्य तुम्हरो कपिनायक तिनपरकोपकरउनहिंलायक वरुनकालइंनवउंडषसहयो॥
पुनिप्रभुदियोवरुनसबलरूपो नातेंकामनिरतह्वैगये सेवाकरहुंनहिंपहुंचतभये इतहितेंपठये
अगुनवंदरन त्यावनकपिदिसिविदिसिकंदरंन कपिनसाथआपहुंकपिनाथ हेरिहैंसियमगहिं
दसमाथ आपुसंगचलिहैंवैआज परखेहैंकछुकपिनसमाज इनकहंआपनअनुचरलेषो॥
चलहुंजियेंनजुनमीनरहिंरेखो भेटकरनआयेनहिंडरसों धीरजउरधारेंप्रभुवरसों दोहा चलि
प्रमिलियनिजमीनकहंअभैदीजियेतान फिरिसंगहिलैजाइयेजहांरामभगवान चौपाई सुनि
ताराकेवचनसुहाये लखनलाजितनतवसीसनवांये पुनिलछिमनअंतहपुरगये रुमासंगतेहिं
देषतभये लखिसुग्रीवनजोपरजंका उनरयोसोंमदभैअनिसंका ताकीदसाविलोकतलछिमंन॥
क्रोधितभयेअरुनहोउलोचंन जोवालिहिजमपरहिंपठायो अरेमूढसोसरविसरायो सुननपउं
नरउनहोउकरजोरी कह्योसुनियविनतीप्रभुमोरी येतुमकारजनाहिंभुलाये कपिनवोलावनका
पिनपठाये रामहियेंअनितोएयअहैं काहेंआपुरोषकरिकहैं छंद वानरभटआवतनभपथधावत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुजनेहिडेराजाइ वधकरिवोअनुचितमह्यो चौपाई सुनिअसलषनचलेधंनुलीन्हें पषरोषितउरछायपरिकी
न्हें अतिआतुरकिसकिंधहिगए कपिलछिमंनकहंदेषतभए जनुजारनकिसकिंधहिरोष उपेक्ष
पिशुनिकपिपतिदोष विरपउषारिगृहंनतेकरे करकराइभ्रातादनचढे लषतेंआतुरअंगदआयो रा
मअनुजपदसीसनवायो पुंनिपुंनिअस्तुतिकरिकरजोरी कह्योछमियममअघकहिमोरी लषंनक
ह्योकपिपतिहिजनावो आयोमैरघनाथपठावो सुनिअंगदकहंवालिसिरनाये लछिमनह्वा आ
कोपकरिआए सोरठा सुनिहग्रीवडेराइ हंनुमनतेंवोलेवचंन तुमअंगदसंगजाइ लछिमन
त्याव्रहुकरिसमिन दोहा करुषोंफेरितारातुमहुंजाइछमाकरिवाइ तापजोरिकैंमोनिकरत्याव
उतुरतलेवाइ चौपाई अंगदसंगगएहंनुमाना कोपितजहंठाढेभगवाना वहुविधिअस्तुति
किपपदपरिपरि पुंनिकरजोरिकह्योमुदभरिभरि चलहुंनाथप्रभुऐनतुम्हारो लषहुंमीतजुतो
निजपरिवारो पुंनिजोस्वामीआयसहोई भूपतिसहितकरहुसवसोई करिप्रसन्नहंनुमनलेआए
पुरजंनलषिअतिआनंदपाये मनिहारमहंठाढीनारा रूपवतीसवकियेसिंगारा महअरुनीलोच
नकोंकोरनि सवविधिसोंविभूषंनचितचोरनि लषनहिनिरषिसोंसीसनवांई असिजनसुषअसक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आलिंगनलसहिं जंनु लहि जो चक्र हंस हसलिसिज सग्गावृन्न फिरहिं चौपाई दादुर लसहिं मौन ह्वै
रहें जंनु संत वैठे वो धहिं नहे कहुं कहुं सेन वलाहक कैसें पापी गंगन हा ऐ जैसें मलन जिजल
निज रूप हिं पाऐं सरजू सेवी जिय जंनु भाऐ अमल चंद्र कर कलिन अकासा जिमि तु व भा वक
हिय प्रकासा नरनि नेज पंथ निज ल सोभा जिमि स दगुं ननन सावृन्न रोषा क्रूजन हंस समूह सो
हावै जुरि जुरि संनम जंन जंनु गावै मन्न के हरी वृष भअभ वंगम औठे फिरहिं गनहिं नहिं कोउ
सम रत अनीन अरुन नवलवां ना हेरा फूलि कांस जिभरि अवगई जिमि विलसहि न समाज॥
वदि थोरे कालहिं नसनम्रगरे नेज सुराज चौपाई धान फलीनें नें अति भावे सज्जन वदेस
भावजनावैं निरमल वीनि धीरस रिदरहीं जंनु ये अवधूनिन नपकरहीं सुनि हरिक स्पोह
नउ हे भाई कपिपति मम सुधि निपट भुलाई निरवन नीच सरहइंमि आई नघषि प्रगटन कन षंन
नाई अपनो किऐ कर्मफल पैहें मोहि को पेवा नी पहजैहें नक्षो मरो वलवनज वनाथैं फतें रघु
रति ऐ धनु लांथैं कहऐ वडे लैसां संन पाऊ नुरनहिं षलहिं मारि मै आऊ रोषि न लषि भाई धंनु
धारी भऐ मित्र कारनि धंन विचारी सोरठा कह्यौ राम प्रभु सकाइ सषा हकंठ हे मार प्रिय॥ सा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि॰कि॰ कपिनसमुझाइ चौपाई पाप भरे मरहिं जे नहिं ओहैं तेसमसकरपयपानमपरजेहैं असकहि अंगदहउ
११ रकहिंगये आसवंधानकारनतनहंभए इहांपक्षनसुनैनेसाहिंकीन्हें तुरतकपिनकहंआयसुदि
न्हो वायुवेगवलतुष्पअगारा दलक्षितिगेकपिदसहुंहजारा सीतापरमविरहउरछपे रामहुं
केहनलवनसोभए सियधोमरीजियतधोअहई मोडिगआइखवरिकोउकहई ममतिय
हरनहारउपकारी सपिसमुद्रइवंसरगिरिभारी सीयहपासमलेउनिकारी सुनहुंप्र॰
तिज्ञाकहौंउकारी दोहा जनकसुतनहिंलैसतुजोंसूनेंगयोपराइ तेहिंसपूतवलजाहनं
निहतिहौंसहितसहाइ चौपाई किमिजीवौवंशाननिजसमविन विरहअनलजारतनतनछि
नछिन सिप्रहिंपरसिसससिमोअंगपरसै जीवंनरावनसुषकछुवरसै दुषितनायलषिल
छिमनकरसौ चलिपतअवढुषपारहिलहसौ आईसरदविगतभैवरषा भयेछमाजिमिज्ञा
नअमरषा चातकमदनमोहतजिदीन्हें मानहुंतत्सुविचारहिकीन्हे भोजंनकरहिंअगारख
कोरा सीतलइवंलविससिकीडोरा जिमितुवंरुपहिंजोअंनुरागैं ताकोंसीतगारमनहिंला॰
गैं अमलकमलफूलेयेअैसें हानदेनहांनीहिलजैसे ॥ सोरठा करिमकरंदहिंपानउडिउंजत ११

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भयो आपु सोऽवं धुनि हारो पुनि तुव सव कारज निसं वारो बड़ी भागि अब नी तुम जांनो नाको काज कारब
मन आनो ऐसे सव कारज समरथ अहहीं पै जस दिसो तुम हूं कहं वहहीं सासंन कर उं कपिन कपि
नायक सिय ढूंढव हे सव विधि लायक तुम्है वालि वधि नप करि दीन्हो अनुचित उचित नविचार
न कीन्हो तिन को काज विसारव कपि पति मेरे मत नीअ है अहित अति दोहा सुर पुर नर पुर
नाग पुर ऐतें न पुर नहिं कोइ राखि सकै जो राम को परम पिआरी जोइ फिरि मैं धरि अतितर
लगति करि सव लोकं नगोन हरषित कै सिय ढूंढिहौं जह लगि पहुचन पोन चौपाई है अ
संष्य कपि जु थ्यतिहारे वन पर वत नद सरी पप सारे उर पजत वैं वानी गनु वाई खोजि लहिं
सिय कहं सव वचि तुलाई राम काज हित संगर साजि हौं नव जुमवीर भुवं न महं राजि हौं सुर अ
सुर उं नहिं सरि समतिहारे निसिचर का करि सकान विचारे हित परलोक लोक महं सोई ॥
राम काज जाके मन होई सुनि यह मंत्र विषै वि घत जो स्वांमी राम काज महं सजो सुन नन वचन
सुग्रीवं डेरा नें परम पथ्यक कपि मंत्र हि मानें कौन देइ अस और सिखावन जस हनुमक हयो पवं
न सुत न पावं न दोहा वेगि पठावहु कपिन मति हूजन न अय तु वोलाइ समदि पके ल्यावहीं भातु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किं०किं० बासव्रतनसप्तना जेहिंवलसकलसराहनभूला दोहा तेजुमहंमरेवानकेंलसभयेहौं आजुकारन
६ प्रहारनपाइहौंजदपिनरलकपिराजु ३० चौपाई सुननतहिंवालिशरीरबढायो नभमंडललंगूर
मेंवायो रामवालिकरजुद्धविचारी दुमालषंनहितचढीअटारी प्रसोतनमरघुवीरप्रसाद अव
पैहौंपतिपरसंनस्वाद हीतरधाकरनगृहवाली निपटहिंकलिकलुषंनकोप्याली छूटेकेश
विगतभूषंनसों द्रुहुंविधिविनयकरतिदूषनसों लरुनिचरुनिदुषसागरपारे प्रभुढिगपतित
निरषतिवसमारे इनैरामकरलाछिमंनदेष्यौ सबनैपहकपिअधिकैलेष्यौ जोकौतुकहिंगा
नगहिलेई कौनसुभटयाकौजुधदेई दोहा कूंदतजवलीनलेगतिनवैहिंकाउंनधाइ अंग न
पवनकेपरसतेंसविनौंरथउडिजाइ २१ चौपाई भुजदंडनवलगर्वहिंधारी कौलेलंगूरहिंगिरि
भारी जससतसैलअरुविटपपलारा असप्रभुकहतहिंवालिविचारा मुठीबांधिदृढकोपिकपी
चहंहिं सा जौलौंहंननजगदीसा तौलौरघुवरसरहिंचलायो छेदिनाभउरधरनिकंपायो लागेंबान
गिर्योमहिकैसें वज्रनिहंनिकनकीवलजैसें मुरछितविकलपर्योरंनधीरा जागिलष्योसुंदर
रघुवीरा धनुकरबांमअलंवनकीनें दछिनकरहिंबांनवरलीनें जटामकुटसुंदरसिरराजें॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देउ वनाई लषंनकहुं सो मोहिं लछिमंन जांनो रामहिं निज मन तें अनुमानो हौं सो हरषि कहौ
पुंनि बानी परसराम छत्रिन कुल घाती तौ नहिं बरन च हैं जगराथा ते आये तुम परकरि माथा ति
नको तिरसकार की दीन्हो छत्री बंस उजागर कीन्हो ते तुम कहं मैं जब जब देष्यो आपनि भाग सुध
न्नि करि लेष्यो दोहा हरि कहं तुम लों इंद्र सम रावन कहं गहि कांष समसिंधु संध्या लिंकि ये ार
उरमहं कहि कछु माष सो कहं बानी सुषद तुवं रघुनंदन नंदन अघ जन कारज बस कछु कह
नहीं सुनहु नयं न जलजात २७ जेहि बल दुसर हरि लियो परसराम को मांन उनकों ठिन
ते हिं लषं न हियें मम भुजबल जांन २८ सोरठा तुव दंड भारी राम हरन भार त्रैलोक दुष ॥
सो देष्यो यहि ठांम जो कहन कहुं कहि लों उमे चौपाई सहस बाहु जीसों रावन कहं परसराम
जै पायो तिनपहं तिनको दाप आपहु लीनो परम सहज सब जगमहं कीनो जो तुधि कारिहैं
मसंन जैमाऊ तौ सब बने बुल बांन कछां ऊ सुभ मसक काइ राम अस बोले मैं नौं षडो धनुष कारै ता
लें तुम कहं आयुध धारन करो उंनि सुं सावधान कपि लरौ सो कहं अहहुं धर्मधुरधारी कृसन कह
हं हुं असत कवंन षरारी कपि जे आयुधं रन न गहिहैं कि एजुद्ध बध अघ न हि कहिहैं हां किं कहं

कि० कि० पर्यो न किसकिं थहिं कीन्हो दैठो बालि द्वार लीं देष्यो तेहिं जनकन कसैल संमलेष्यो सोऊ होउ कुवंर विलोका
५ चकितत रहयौ चष भरि छवियोका गुंग्यो कुवंर नये जुगल किसोरा संदर तें न लागहिं बरजोरा मोरे जान इन्ह
हिं महं कोई फेंकन हार देंत्य सिर होई दोहा फेरि गुनन मो लही निकर अपने अनुजं हिं जोहिं परममी
न दशकंध मर जो लिषि पठसों मोहिं चौपाई दशरथ होउ निज सुतन निकासा तिन दंड कवन कीन नि
वासा तुम्हरे जे सहाय हित निसिचर राषे में जंन थान महि जबर जिन कहं हं निरिषि मूकहिं आए
सुग्रीवंहि निज सषा वनाए अहहिं दोउ मुनि वेषहिं कीन्हें वल वानन मारन मन दीन्हें हो मेरे
तुम सषा पियारे कीये सो ईजाहिं जेहिं मारे सवल छजइ नलीं मरुं भावत तेपे इमो मेंन अ
स आवत राम रुं कहयो तात तुम जाई मो कहं वालिहिं देहु जनाई लषंन गए पूछेहुं कपिरा
ऊ को तुम अहहुं कहहुं सति भाऊ दोहा रम छत्री लछिमन कहेपोसा पुंनि कहं मुसकाइ छत्री
जाति शरीर लीं तेंतु वंजानी जाइ राघवं हम लछिमन कहयो सो कारु कारन विचार केर घके तुम पत्र
कें राघव नाम तुम्हार २५ चौपाई तिन कहं हम रघुवंसी अहैं राम नाम लछिमन सवकहैं सो
मन गुंन्यो राम पये सोई जंतु दिग पर स राम मन रष्यो ई तुम संमवेस अहहुं दोउ भाई कौन राम सों ५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाइँ औरौ द्रिढ हू स्वर्ग हिं पाइँ तुम्हहिं विलोकत सो कढि गयो उर विज्ञान प्रेम पर भयो आध ऊँछ तमंन
तुमम हरखे तो तुरत हि विज्ञान हिं लहैं सद्वां तो सत्ति वेद की मैं प्रभु लिय अजमाइ और तनी को लग
तेभव तु वें पद भक्ति सोहाइ अवसांस न मोहि राजि कों दीजें नाहि षरारि मोको दीजै प्रेम पर अपनी
रीति विचारि सोरठा जव तें देखे उपाइ तव तें भो विज्ञान उर तुम में जग तल खाइ शत्रु मित्र को उ॰
मो रत हिं चौपाई जव लो वह त्रिगुन तें प्रांनी जव लो शत्रु मित्र अनुमांनी कारि नाना त्व तु हि दुख
पावैं तव ठीं तक तें हिं काल सजावे मूढ अविद्या परि डषल हैं माया मल दारा दिक चेहे क्रिया करउं
माया तु वें रासी नातें मो कह लें ऊं निकासी तव पद चित्त रुचि अनुरागे नाम कीरतंन वांनी लागे
तव भगतन न सेवा करु कौरे मम उर आप मिलन सुख भरे तु रूं दरसन सब लोचन लहैं सन्त जन अंत
न न क्वचि नैन निरहें पद पर दक्षिरा करहिं वदाही रहहिं सीस नन जु पंकन माही दोहा मायासंत वि॰
मोह नीं ते हि छंन दिय केजाइ रवि स्तुजन सां राजि तुं नैन वोले मृदु सुसकाइ चोपाई जो तुम कहेसु
मित्र सो सही गुन ऊं मोहि सव जग अस कही मित्र क्रिया तें हि राजि न रीनी हठ मजि ज्ञा राम ऊं की
नी तातें चलऊं वालि कहं मारी करऊं तिलक तु वें मे सव कारी रां जित हऊं ठ सासन सि रलीन्हो मधु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किं किं ६

मागेसोरवि हनुमतें पठाई हमरे सुत कें किहे हु सहाई नल औ नील रहें मम मीता ने उत्साहें ते हिंगुं निठुर
नीता कहत सुनत अस नहं कोगए ऋष्यमूक ते नविलो कत भए सिलखि रामकछु कमुसकाने पुंग
ग्रंगुष्ठ तें हिंग हयो अस्थि जें फेंको दशजोजन सो गयो दुंदभि सब भगति लखि लषण सो मंत्रि न जुत सु
ग्रीवं सराहें लषि प्रभाउ उर भरे उछाहें पुंनि कहें प्रबल सात तरु जारा बालि उे लाइ करत प नितारा
ए जो इन कहं छेदे एकसरे बाली बध विस्वास उर परे सोरठा हरि हसि मारयो तीर गालनगं
न छिति वेधि के प्रविसे उफेरि तुनीर लषि उग्रीव बिंसमित भए पर्यो पाइ कपि दौरि उर भरि
प्रेम परम सुख बोल्यौ पुंनि कर जोरि पुलक अंग जल नैन जुग जगन्नाथ तुम राम ॥
परमातमा परेस पर आनंदतंनधंन स्याम तुमही व्यापक सब जगत दोहा मेरी भारी भाग्य तें मि
ले आ प इत आइ जिन्हें लषें न हि जमु निनि कर सह हि कोस समुदाइ १७ चौपाई तुम्हहिं लषें न
छूटत भवरोगा सुरु पतनाबाह र बुधुंनि भोगा जिया तत न पराजि कुंपरी बारे तुम मा सा कतन नाथ विचा किं
रै नातें अब इक्षा कछु नाहीं मेर उपर प्रेम महिं उर माहीं आनंद अवधि लहौ मै भागें न अब नहिं
चहौ विषय अभिलाषें न सिद्ध अनादि अविद्या बंधन मेरो छूटि गयो रघुनंदन जग्य दान बंधन नहिं ४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पम होन मंत्रिनजुननिमैं हियें हपामै रहऊं लुकोंन चौपाई परचननसंमदुंदुभिसिरभारी सोफेंकोनिजवललिषि
रारें अपसवलजोनिजनैंननदेषो तौवलवोनजुमहिमेलेषों हरिहसिकहंनहेंचलहुंकपीसा भारीजलों
दइनकरसीसा हंनिहलषिननहईसकचले निरषनरामहिंछकिछकिभले मारगचलनकरुषोभगवांना
लभगेंनजामवंनहनुमाना वालीकेपेसचिवंसुरुपे कहहुंमीनतुवंसंगकिमिआए कहं लंकंठपुंनि
पुंनिकारिवंदन कारनकहहुं लनहुंरघुनंदन दसकंधरसौंवालिमिताई कहोलिंछपतिनीतिसिषाई
सोरठा प्रभुतौंउचितनहोंन स्वनहुंवालिममसीषयह रावंनओरहिंगोन तवपितुरिपुपापीपरम
१२ चौपाई पुंनिपुलस्तिवंसतिनकेमींनन देषेहमसारिइनिकेंजन अपहुंहिंकुवेरधर्मधरधारी॥
मीतकियोहरतिनहिंविचारी रहुनहारिदनसुमिरनजिनके पालवैलवांधोंघरतिनके रावन
तौपापीपितुद्रोही सुरमुनिकुलघालककुअतिकोही पुंनितुवंवलसंमवलनहिंताको प्रीतकरव
नलनहिहैंवाको किएमीतपहिंअवहिंविनासा मानहुंसीषमानिविस्वासा सोसुनिवालिविहंसि
अतकहेऊ पहिलेउधमानप्रभुरहेऊ जामवंतमेगुनेहुंउद्धाना मंत्रकहेहुंजिमिकहहिंसुजाना
दोहा निजमंत्रिनकेमध्यमेंइनकहंदियोनिकारि नवनेंमोसंगहोरहेंतिनपरिनामविचारि ॥ १४॥ चौ॰

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहं मरिहौं फेरि आइ तव वंदन निहरिहौं दोहा तव तन कपं छांडि रहौं नुमत्ता कें पहुंहार असकहि भीतर कहंग
यो पहुंचो तास अगार चौपाई वरष एक तासौं रन कीन्हों कटेउ रुधिर मैं असमनहीं न्हों परयो गिनत है वालि
हि केऐं पुनि मतंग निदुष कियो षनेरो विलप तन गिरि वर श्रिंग उपारी मूंदे कंदरी द्वार सौं भारी आइक
ह्यो घर सब वड ष कीन्हों पुनि जुरि मोहिं भूप करि दीन्हो कछु दिन महं वाली वल वांनो आसे मोहिं लषि
अति रिसिहांनो भागि वागि सब लोकन आयो कहूं न वाली नेक लपायो मुनि श्रापै डर इहां न आवै
हरि मम तिय निज पुर लै वछावै असकहि दुषित नरोइ सो दीन्हों करुनाकर उंसंक लपकीन्हों सो गा
सम्मप निज्ञा मोरि मरि हौं न त वारिपु केक सर मीत सोक देष्योरि धोवें हि मुष हरषित लहिये चौपाई कहं
सुग्रीव वचन प्रभु मृदुगाना केहिं विधि मरि है रिपु विष्याता देषें न दनुज नहुं न दुरगीता तासों कि मिजोर
हुं प्रिय मीता नाथ जास विक्रम सुनि लीजै पुनि निज वलहिं परीक्षा दीजै दुंदुभि नाम दइत एक भारी
अति वल वांन महिष तन धारी अर्धरात्रि किसकिंधहिं आयो जुद्ध हेत वालिहिं गोहरायो धायो सुन
त वालि वल वांना गहि दषां न जुग कियप विन मांना फेकेउ तीस जोजन गिरि सिहांई परयो मतंग कुरिहिं नि
पराई तेहिं लषि रिहिं नी श्राप मुनीसा वालि जो अहै हैं करि हैं सीसा दोहा तव जै आवत वालि न हि मुनि कैं श्रा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नकीन्हें रावंनकहँसोहरेनिपुनकोई नभपथचलतनारिसोरोई रामरामहारामपुकारत बिलपतकरुनासहिं
पसारत दोहा परवततपरमोहिंपेषिसोंदुषितअंचलहिंफारि निजआभरनहिंवांधिकेंसंचिवंनमधिरिय
डारि चोपाई तेंभूषंनहमदरीधरापे आपुविलोकनहेनमगाए तिन्हेंलीनरहीहृदेलगाई गिरेहाय
सियकहिंमुरझाई पुंनिलछिमनहिंचीन्हेंनकहहुदीन्हें लषंनकहत्योनेवरभरिचीन्हें पुंनिपुंनिभूषंनले
करजोवें करुनाकरी करुनाकरिरोवें करुसोहंसतजियचहतउडाई बिरहअगिनपरजरेनजाई॥
कहँसुग्रींवंधरिसमनुधीरा तुमतेजानवांनरघुवीरा हमरिहुहरीगईप्रियनारी पेअसकवहुंन
भयोदुषारी करहुंमतिज्ञांमेरघुनाथा सियहिंलेअओंहोहंनिदशमाथा सोरठा अ्रसकहिंमीततु
गाइ मुखधजाइहरषितभये बोलेंपुंनिरघुराय कहहुमीतविरतांतनिज चोपाई कहंसुग्रीवं
वालिममभाई करतरहेंउतिनकीसेवकाई मयसुतदेत्यमायवीनामा जायपहुंचहतिनसबकेधां
त मा सोगुंनिवालीकहँतांना किसकिंधाकहंकीनपयाना द्वारेहिंसिंहनादसोंकीन्हों कढिवाली
तासोंजुधलीन्हों जववालोकोमुठिकालाग्यो व्याकुलहेसठघरकहंभाग्यो धायोपुंनिवालीतेहिंपाछें
दोरोमहंमोरहतोआछें सोभयभाजिदरीनिजगयऊ तेलीवालितवमोसंनकहेऊ मेभीतरसुधिलेषल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रीवँ वालि कों भ्राता मंत्रिन जुत इहाँ बसत सकाता दोहा सो लषि तुम्हहिं डेराइ मुलि चीन्हन पठयो नाथ हो बउ
भागी प्रभु लष्यो भलो सुषन के गाथ सोरठा नाह कि प्रियनारि वाली बल सों हरि लई धर्म नसे जु षरारि उ
चित सषा सुग्रीवँ सों चौपाई तेऊ प्रभु सेवकाई करिहैं ता वँसंग तु वँतिय हारि हिं मरिहैं प्रभु कहँ कपितें मो
हि पिआरा करि हों जो तें मन हिं विचारा हरषि कहयो हँनुमंत सुजाना मम काधें चढिये भगवाना अस कहि
डहुँ न कंध कपि लीन्हो भूधर वार पयांन हि कीन्हों परवत पर जहँ विसत वैठो गयो पवँन सुत मुद निधि
पैठो तरुतर राषि दउ नरहँनुमंता कहँ सुग्रीवँ सों भोइ दुष अंता उठहु वेगि मैं प्रभु हि लै आयो सुनि हरषित
हुँ कपि पति धायो राम हिं निरषि मलो सुष लीन्हो अगिनि थापि पुनि मीत हि कीन्हो दोहा राम कीन
ते हिं मीत निज भो निज मन सो रास निरषि भाव अनुपम परम हँनुमत भरे उलास सोरठा सषा जो रि ए
ग्रीवँ रघुपति कहँ आसन दियो हँनुमत सें नित सुष जीवँ लषंन हिं आसन देत भे चौपाई लषंन सवँ वँहि
आसन दीन्हो आसन सव सों सवन हुँ कीन्हों पुनि लछिमन कपिपति सों वोले निज विरतांत आदि सों षोले
सीता हरन सुनत कपि ईसा प्रभु सों वोल्यो पद धरि सीसा हरि हों मैं सिय पलटि तज मांनी पुनि सहाय करिहौं स
व भांती कछु विरतांत नाथ मैं देषा कहों सोई अव करि य सरेषा पैकस मैं मंत्रिन संग लीन्हें रहेउ सैल पर आसं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ना देषहुंकोहैदोउवलवांना दोहा वटुरूपहिंतिमनिकरकहहंजाहुकहेहुंमृदुवैन होंहिंवालिकेंमीतनौमो
हिंभजाथकुसैन चौपाई विप्ररूपधरिपवंनकुमारा आयोजहंदोउसुछविअगारा सादरसिसनायकरजो
री छविछकिकिपविनतीरसबोरी कोहौंपुरुषसिंहदोउवीरा मुनिवेषहिंधारेंधंनुतीरा निजदुतिकर
ऊँप्रकासितलोका लषनरेऊंमनआनंदथोका पुंनिकहहीप्रनितकैतिमिरारी आएनिजहठनकारनछ
धारी कैतुमईसपुरुंमिहुषदेषी आएवलदलदलनिविसेषी फिरिफिरिमोमनितुमकहंजोई निश्चै
करनिअहहुंनुमसोई छत्रियतंनईसनकरभूपा जाकीलीलापरमअनूपा दोहा जाकीसक्तिसम
र्पेसवउतपतपालननास अकापअगोचरजासहगनिरायकपरमहुलास सोरठा हरिकहंतलछिमं
ननात कपिवदुपहसास्वनकुशल समुझिकरहुंनुमवान वेदसोरनिजतहैंगुंनि चौपाई तिनकहंहस
रथीहमरोऊ रामलषनअसकहंसवकोऊ सीयसहितपितुसासंनपाये घरतेसघंनकाननहिआए
इतिनिसिचरहरिलिपवैदेही षोजतनविकलफिरिपहंमनेली कोहौंतुमअवमोहिवताओ छननजच
नकपिआनंदछाओ पुंनिपगपसोपुलकिअकुलाई मीतिरीतिसोकहिनहिंजाई कहयोनाथममसुर
तिविसारी वनवासिसहयोंकहिनदुषभारी पवंनतनयंमैसौहनुमाना गर्भअंजनीकोंजगजाना नामछ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि० कि० श्री गणेशाय नमः दोहा जै गुरु सिय हरि सरस्वती जैं कपीस हनुमान जै गौरी हर गजवदन जै सब संत सुजान ॥
१ १ अरि कुल कुंजर केहरी दोउ अति बल ज्ञान मुनि बेषहिं आयुध लिये आगे किए पयान चौपाई कछुक चलि
मधुपंपा सर देखा बोले तेहिं अति अद्भुत लेखा बरुण कोपि जल निधि के पाना करि विरंचि सो विनै सुजाना
मुनि अगस्ति आसन निसरे हीं धोय हरष्यो उदधि रिसि तेहीं अबं निउदावत आदि बराहै धोय हर्षो अंबु
धि अवगाहै सो विधि अरविंद न मकरंदन चंद कर लै फेलि मन फंदन मंडित पल पल कल अलि अवली
सारस समर सारसी न वली मत्त मराल मरालि हुबो लाहिं चलित जलचर न लहरी उ लाहिं परसि समीर
उठहिं जल सीकर तेहिं दरदिन सोभित अति हीं सर दोहा कीउ हिं सब सो मुनि नतिय कारि कारि जल तट
भीर अंगराग के संत सुमन परम सुगंधित नीर चौपाई कहूं नहाहिं मुनिन के मंडल भरत नीर धुनि
करहिं कमंडल कहुं कहुं मुनिवर वलकल धोवें पारल सलिल नीर तेहिं जोवें केत किरज बंधि कूल
रेनहैं मधुकर मंडल मोद लेनहैं इमि कहिं किय विलाप न हं राम फेरि चले कछु करि विश्राम वन छवि
निरखत होउ सुखसाने रिष्यमूक पर वन नियराने ताहि सिखिर तेन किसुग्रीवा चले उभागि अति
संकित जीवा जानि सो जिये कहहनुमाना तुंनि आगे कहं करि पपमाना तिन कहं तुम्हहिं जाहु उधिवा

१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ङिंगपरत्रै विंगनकंचनवेवसैं सोरठा रामसरासनसोंचीर सरपुजांआछीकरी अवरेषरि
ममतीर कैसेपैधंनुतेकरहिं चौपाई असकहिक्रोधवांनप्रचंडा चलेचोरहेजनुजं
मदंडा चारिचारिदुंवाजिगिराये आठसूतरथरहितनरं आये भुजाकाटिप्रक छितिं
पुनिदेधी येकवांनविसतउरमेधी तवधायोसो अतिरिसिधारे तेरिंकेवहरखिव
हुसरमारे कारेंवैवांननसिरतीनौं नमसुरमुनिजैजैरवुकीनौ सकलसेनरत्नवर
अवलोकी अचरजमानिमपो हंनसोकी निरखिरामविकेमकंधुतेसो पुनिरंनरं
ग रंग्यो अतिलसो कोपिविविममवहुवांनचलाये रिसि अनुविदिसिगगनछितिछा
ये छर सरचरदिसि अनुविदिसिसरररथमऽकेरिकेरंनलग्यो वहु अखसखे
निकलननरहरिहिंहेघार चररनरसपग्यो पुनिरामनेतेहिं सरकाटिनिजसरचरषिर
इमिकोतुकक्रुसो आकासविन अवकासतरनिप्रकासविनजगतनमभग्यो पु
नितजोघरनालीकविकरनिअरधचंद्रनराचहैं वानरकरनडुरंतवचकुहुविविधि
सरजुधमाचहैं वडुवानपरजेवांननमेंरंडारमानविराजहीं तेउलरत अतिचलसाँ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर:
१८ नमानहुंविनुबासबसंतजहीं सोरठा छायेसर आकास अंतकसंमयसरसमिरिसर उरमरंकरि
अतित्रास त्रजेमनावंनरामजे चौपाई रामकिलखिबलनिजदलथालक भयेश्रमित
मानोगुनिबालक सिरनाइकरि अतिजेधर्म्मीन्सो हरिहरितेकिलधुमगसंममान्यौ प्र ठा
नुसनमथुधायोखलकैसें चलेपतंगअनलतकरजैसें निजसर अंधकारकरिजोधा तें
नोघेकसरबरकरिक्रोधा सोसरधनुषकाटिमहिडारो सानवांननतकिमरमारिमा
रो कोटयोसरसरसरनिसोवबनर विनआवरनसोर अनिरधुवर जो अगस्तिमुनि
सारकीन्हो सोधनुषभुजनपुनिचरिकीन्हो धरिधनुपरमक्रोधकरिधाये धुजाधर
निमहंकारिगिराये छंद सोधुजाधरनीमहंगिरयो मननिजरतिसुवरनकोवन्यो जंनुकर
नरामसरसंलबिताअंबनिजतन्योसबगन्यो पुनिक्रोधकरितमिचारिसरखरविपुल १८
सरसरिलियेहने रधुवीरहं निसरनीरसिरभुजउरउहंउरसुबसंने तेरा लसतिहरीतें
सिरलखनहिविने रवनन वहरं राजननरनमरं रामकोवरनन आहन अरविंद सियसोभ
रतकराहरनलखनहिसेनसिधाइ वलरेखाररबंन लरनतखरसोश्रीरधुराइ सोरठा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनि हरि निनेरहतीर स्यरपुछन उकारस थंनु कारे श्री रघुवीर नमस्कार मुनि जेजे किये चौपाई गहि
करगहि सुषु जेवर कैसें सो रत कालदंड धरजैसें बोले राम विहंसि सुनि रे षल मुनि अपकार
कीन तै जन दल ईसगु हे रसु जंन अपकारी लहै नाम समोउ कहौ प्रकारी लोक विरुद्ध करम
जो करई ते हि अेहि सम गुनि सव सुधरई कांम लोभ सुख हित अघ करे और असंन चंम
नो रवं मेरे सुन सठ दंड कमुनि जे रहै केर असंन हित सवको चरे कीन्हे रघवति न अप
कारा के हि विधि स्रये तोर उवारा अघ निज फल ततकाल हि करे विषधां पै जिमितु
रतै मरे छंद जे पाप करमा अहित जग कोई तिन हि मारन हेत को नय सैंन मोहि वनवास पा
पन हेत धरम महिसेन को अवनी चल धुये वां न तो हि छिनि छिद्रि हैं निज नो कमे जरैं मुनिन
हनि रहनि ते पठाये जाइ है तेहि लोक मे करन हार सो लेरकारि अवकाद हनत सीस छनि दोरा
वानी रघुवीर की बोल्यो निसिचर हंस चौपाई याकि निसिचर हंनि सुनु राम निज व
ल बल गहि कायहि गाम जे बल वांन हेत जगमांही निज मुख निज वल वरनत नाही
लषहुं न मोहि गसकर धारी षड्जे वडो भ्रमधर अनुसारी तुम्हैन दोष काल मुख आते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं:
२०

ताते जोई सोई करै जहान होवने कनरहियहैं करेजैंउ वदुजन नपाने करैं सविता असल
नहुषयायो ताते मोहियानन हिलगायो असत ताहि रविजुध रहिजाई तव दैहै सुरमो
हिय चाई तोहियठाइ काल के पास पोछि सैं निजवीरनतिय आंसु ८८ असकरत
पेज्जीगं तहिरथ कुलिस सम सो रतन भई विनतरुनजारन जरनु गतिरथनाथ परं आ
तुरगई प्रभुताहि येक हिंतीर कारयो विहसिमरउं नियो करूपो रैनीचतैं अचकत
गरजनगहे चलत वन हिंरत्यो हेत निजवीरनतिय आंसुके पोंछन कौ प्रेम कीन
सो मूंदो अब दै गयो हैते पल को हैन चौयाई जौ नीग तव लहि प्रन लीन्हा सो विसा
सधान तुवं कीन्हा अरे धुइन तवयान हीन रहि हे हरमुनिसवै अभै अवकरि हैं परि हैं २०
छिति रज भरि सिर लागे सोवहिं जिमि हयपति चंनुरागे जन स्थान मुनि अभै विचरिहैं
गहि मम सरन नेहि जयतनय करिहैं तेरे हैं दुख करि सवतुवं मारी तव असयुइवविचारवि
चारि सुनत तहि खरउर रवयहरज सो खर वोलत न मो को परि भयो गरव भरे तुम भावतजे
सो राजेन सौ कोउ करत न ऐसो जाके सीस काल जब आवे ताको ऐसो रभासव भावे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छंद पुनि निज कुमर अति क्रुद्ध ह्वै मन महुँ बिदयउ पारि कै पठि मँ बन तेहिं अस्तुति अस्तु करि हे-
रि बोर हैं नेउ पूचारि कै हरि कारि तेहिं तिल तिल हिं करि सर सह सउर मेरु तु भये सोल
उ सौ कज्ज लसेल मानहु जे गैर राज तन ये अति गरजि धायो रामसनु मुष नरल हरि
वर सरल लियो करि क्रोध सो पूल यागि सँम तेहिं मा कहु हृदयं हिम हंस्यो जरि जिन्यो सो
बह मोउ समन हरि हरुल्लं मसो हत भये पाहिं भांति प्रभु कौतुक हि करि त्रैधरि महँ निसि
चर हये दोहा बरषि हिमन हनि दुःमी सुरकारि जे जे सार अस्तुति करि गम ने सस्नु लषि
प्रभु ज्वेनु यम जोर चौपाई पुनि तेहिं पल मुनि गंन सब आये जात बगासि करि अस्तुति भा
ये पुनि बोले कि प्रसब हित सुषारी अति बल पानन निसाचर मारी एहि हेत मुनि तुम्हे लै
आये अब करिहें जप तप सुष पाये पुनि तेहिं समै लषँन जुत सीया आये निरषि प्रभु
कमनीया लसहिं स्याम तन रुचिर रुधिर कन मनहुं नील गिरि इंद्रबधुन गंन दो० छवि
धनुष बर कर सर फेरन्त मुनिन स्याल हि गंन सो रेरत पूजहिं मुनि गंन निकर प्रवीने
नरं सिय लषँन प्रनाम हिं कीने चौ लहि जल हासि या समुहाई बिगत दिवस रजनी नरं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं
२१

आई होत बंदनि छमनिप बंनतिन अस्तुति सांनतसार नउनसुष्यो सीय को कमल माउ सिंगार
गोलवहतिनसाह युनि सीय लसंन जत राम पंचवटी महं आइ करि कंरन लगे विश्राम चौपाई
भागि अकंपन पहुंच्यो लंका भवि सो ल बंन मबंन स संका सभा मध्य लंकापति मंडित तेजरुजा
र तनहनि अषंडित करि प्रनाम उ बलुहि कर जोरी बहुरि जानाचत मो कमपारी जनस्यांन के
अरु रतनहारे षरदूषन पहु समन संब मारे नुरि भाग आयो लै प्रांना सुनि बोल्यो रावन रिसि
हांना कहे कौन की मीचुतुलांनी जो मो सो रिपुता असठांनी निज बाहुन बल पबंन तधारे
निज को धाति आगि रबि जारे सक्र सहित आठो दिगपालो रन मंहं रहतो होइ बिनकालो
होत करहुं मो चहीं मोच मै जबहिं धरौं धनुसांप जीतन हं नरनारायन नहं कोपि कस्यो
दसमाथ चौपाई सो कहनाथ अमै जोपाउ तौ तुम सौं ते रिबरनि सुनाउं पायो अभै २१
तउ मैं याज्यो कंचन करन अकंपन लाग्यो दसरथ तनय नाम है रामा स्यांम सरूप
रम अभिरामा सरद चंद बिंदक जे ति आनन है अजांनभुज बिचरत कांनन जस बिक्रे
म परताप महारे पटतर कहुं कोइ जग न निनारे सुनि उसांस लै कहा दसमाथा पंनने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिक करत रघुनाथा पूछै तिन तहिं जिन रिव लत तौ ल्यो षोमन गुंनि युंनि विरंसन वोल्यो
अहै राम येय रघुन धारी धरम वांन जुथ विक्रम मारी सोरठा अब्रह्म सब्रह्म रंनि युंन अ
ति नैस सरिता को वंधु नाम लषन डुउं सिव यंनजोर अंगलु मर्केध चौपाई आंनन चंदनै
नरन जारे यांन सरिस मग्रमु रहत निहारे तजामितिजनत हेउ सोभाकर कूरकाल सज्जन
वौंनरधर रहेन अस्तुर अमर विधि हरिहर राम अकेले हिंन्सो सरलेषर चलत राम
सरमै प्रम देषो चलयुत तापयाति अंनुपम लेषो मागहिं निसिचर जे रिजे हिमारग तो
हंत रलुषरि रामकर सारंग सुनि रावन नतरं आतिरिसि सानो कसोजइ कहे करडुय
षांनो सो करतिन कर वल हुनि जीजे यंनिजो भावे सो प्रभु कीजे कुपित राम हइरि
अजीत काल डुले रजा सु मंय भीता सोरठा उलरिवसावे गंज निज वांन निकरि जो
चहै करहिं अकास डुं भंग अंवनि तवहिं नषत सव चौपाई चाहै सरसो धरनि उ
ठावै व्योम धरनि छिति यो मवना वै चहै तौ जल सो जगत रिंवोरै येलास कलस
मइमि फोरैं चहै तौ वायु वेग रहित वांनन ठनमरु करै विसाव विनु प्रांनन चहै तौ जलसो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर: २२

बैसरहैबेें चहैंतोजलविनजगतनहिंयोधें चहैंतौसरसोंजगसंघरैं बोनहिंसोंछिजियालनकौंं बेन
हितुम्हरेजीतंनलायक सुनहुंछमाकरिनिसिचरनायक जरिसुरअसुरमलावलसैं तउरा
मसरमहंसवजरैं तेसिकेवधकोयेकउपाउ मैमनगुन्योकहोसोइराउ लेरा लठिहरजेहि
नारिप्रियपरहुंउपायविचारि विगतनेतीपञ्चतिलोकजनतनाजैहैंप्रानवहारि चोपाई परम
तरावनकेमनभायो आयहुलहिसोसहजनसिधायो नातीसमैसुपनषाआरे बैठोल
घोसभानिजभारे राजतरावनकनककासिंघासन सुवरनवैठेमनहुहुंसन विलुचकंज ना
मरुंडवजुघर लगहिलगेउरऔरावनरर अजेअसुरसुररावनकेसो परसतीरकालजं
नुचैसो पौलवेडछिगन अंनुराते मुकुटनितसवमणवनधारी नीलकमलतिडुत अहिमु
जवीसा सैलमतासमचैरससौसा छत्रचमरआरिकियहुतीने सेवहिंसेवकमनुपगतिने
लेरा जीतेउनागनअसुरसुरसिपउतरकैलास धनदजीतिपरयुदपकरिपोछिपनंर २२
नवंननास चोपाई निजवाहुनजोलसिरसविरेकै निजवलजोतिलिपोसवलोके निसिच
रितेहिरावननपरपरी रावनसुधिरचरसमारिसिनरी नारिउहापोनिसिचरभूपा कस्योकौन
कोतोहिकुरुपा केघोलोकपालमरकोई केसुरअसुरंनागमहंतोई वेगियताउछनरि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मरंमारौं कोनृरिसकै जबहिंधुनुधारें सुनिबोलीसूपनखारेयत नुव्हैमनृरिस सनिसिसोयन
नारिनचसविन्हतनयननुहे नासकुवरिचढिकरत वेनरै जमेरुवरउघंनजुतसेना मुनिजप
करन लगेजुतचेना सोरठा एमनचघंनचलपारे सुरनरमुनिसवमें त्रमे सवनिसिचरसमु
हाइ हनिहें देमेमनगुनउ चौपाई योल्पो एवनउरमेयारे केहिहितहंनेउसोकहुसमुझाइ
सोकहयं चवदीमेजरे दाउ राजिवृदृगिरवनमरे तिनकोएगनारिसुपकरषी त्रनुयंमतोनि
उंलोवकविसेषी तुवहितनारिरनमैलागी लखंनहरीनासाश्रुतिभागी आइखरपरसो
चढिगयो रनमंहएमतुरतजेसिरपयो रामबांनचलतहमेरषो तवतेमनसवनिसिचरले
ष्यो चरेतौजारिकेरिजगवेसा आइसुरमरननहिसरेसा कौनिउपानिमिलेजोसीया तव
तुम्हरेजीवनकामनीया दोहा समरथनहिंतुमजउकरकरउ सोवेगिउपाइ जातेआवैसि
यसहनउंषिनसत्रुमारिजाइ समाधानकरिभागिनिकोनिजमनकरतविचार लयंन
त्रंतरहपुरगयो गुननमयो मिनसार मोसमखरखलवांन हलसहितहंनेनरयेक त्रसको
उवेहहेकरेमतिनुहिलहेविवेक चौपाई नरवैनहिंपरआतमत्रवैं चनलमारउनारेच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर॰ २३

जोमे

हैं जोरघुवरपरईसरिसही तौतिनकेकरमीचुरिसही कारि हौंतिनकोराज जोनरतौकाकारन
त्रैकाज मत्रियंच अतिकठिननकरिहौ करिविरोध अवतुरनहिंनारि हौं मनवकरममम
तपरदृढ़करौ मोहिहेनिसरिसुविमारहिंहरो निह्वे करिचाहिरणवलधाम गोमारीचनि
केतसकोमा लखोजाइमारिचसुराही जदजहंरमनचर्मरिधारी संजमनेमव्रतनिसवकी
न्हे मनुघरईसचरनमनलीन्हे सोरठा किपप्रनामकरजोरि लखिनिसिचरपतिशजिपुनि कह्यो
माज्यमैमोरि केहिहेतआउवमोपभो दोहा कह्योनिसाचरराजमेअरतअवगतितोरि राम
कीनश्रुतिनाथविनविनअधमगनीमोरि चौपाई ननस्योनकेवंचेनकोई तुमहूं सवरिसुनी
सोहेरे असकरिकछुहरिनिसकीन्ही दृढ़विरोधमहमतिनरिषीनी करुमारीचसहायरे
मारी जगवत्समायाएसमनतुमारी होहुकनकमगरजनविंदुकारि औरौचित्रविचित्रह्रपध २३
रि कहीनिरांखितोरिनिह्वैसिया यकररुमगयरअतिकमनीया एकरनतातिदिह्वैजा
वत्रैरे हरिहौंमेसियघैदुवचैरें तियविथोगकतातिनकंमरिहों निसिचकुलसहनमे
टरिहौ सोसुनिउरमारीचकोदुष्यो एकहुरकरस्यो अधरमुघसेखा दोहा रामचरत्रेम
विहितजेहिसोज्योआंजुलिजोरि आपुंएवेनरितवपंनधर्महिनीतिनिचारि चौपाई

ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रियवादी जगसुलभ हिं रावन दुरलभ अप्रियपथ्य सिषावन श्रोता वकता दुरलभ तिनके नृपते स
तम सचीव नहिं जिनके हुमचचल विन द्रुतन पन है धरम लीन अधरम हिं त्रैन रहैं राम धीर धुर धरम
हिं धारै हैमरजा रूप पयोनिधि मारै लो मारिके त्रैगुनन नहिं पैको सीलवान अधधुपउनने को
सब जग हितै अरितन नहिं चोंरै रूप अनंद रस सिंधु उमारैं सनि पितु वचनन करन वन आये कहि
अस सब विरनोन सुनाये वरषंडि तस गुनन ते हिमारी करकस अजित रहै भ्रिषरहं नाहीं सेहा रे
जन संतन विक्रमी परम प्रतापी वान तेहिं निंदन लापकनही तुम रस कंठ अजान चौपारे नि
जते ज हिं रतितन सिपरहैं चहे तौ तेहिं ने जे हिं जगहै रावनन तेहिं के हिं भांति नर हिं है परसन वि
नस बेद धु जन रिहै सब निसिचर करकरु रुक न्यांनै जे हिमहं राम को पन नहिं ठानै को घिन रहित
निसाचर धरनी करि है सति मानहु तिन करनी सिष मैं निसिचर कुल को घालक सो कर अ
स जे हि करैन वालक निरत विसेन विन अकुस कामी सो करु होइन जे हि वरनामी र
कस कुलतय होइन नासा सो कर जे हिं पुर रहै विलासा नृपति कुसील को मरत तुम
अस बुधि विन पापी मैं विन को चस सोरठा लजन अपन पो रस करत नास सो तुरत ही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरें: गावत रहैं सुमेस निगम चारि मणि विबुधमुनि सोरठा बाँनज्या लुई धनु धनु धरंन मुनि हियें हरि
२८ सुरंग रघुवर कोपकै सोंन मरंस कुलन सोह पतंग चौपाई अप्रेम पवल राम हिं जांनो
तिन कहं सिपायरम घ्रिय मानो रत्नाकरहि धनु वलै तेनो तेहिं केरनउ पापन कीनो
तुमकारन मह रामजो देखी करिहौ तुरत हिं अंत विसेषी मनविभीषंन परम सयाने
नीत धर्म सव तिनके जाने तिन सौं पूछि मंत्र अति नीका करहुं राजसो रमन मरठीका
रघुवर वल मैं देखेउ तेवंन तातें तुमकारं देत सिखावन येकसमै मे अति पल सौना धरे
स्प्ंधर रहि समांना परिथलि येलो केत मै देउ मुनिन निरषि भोजन करि लेउ सेत वि
परहुं दंडक वनहिं मषकारन न या वे कोर गाधि सुवन डरपति भये अति भी षंन मो हिं जो २८
र चौपाई मागो दसरथ पर सुत जाई रघुवर अरु सव तिन रिसि पाये ठांन्यो
(मुनिमख से) अत लेउ आई घास वरिषउं नकधु चरे करि विधि भीम रंनुज दलु हे
मो हिं सैं ना जुत संग लै जाई करउं अ मै हुम सम मुनि राई मुनि करि सेना जुत नृप रही रा
महि हैं हु जगत जस लहो वॉलक राम नउ वल वांना तिनके मारेन माहें सुजांना अस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धरिमुनि सेउ बंधु लै आये अरु सब सखा तिनहिं सिखाये ठान्यो मुनि मख होम कराई धरेध
नुषताकरिं सेउ भाई तको कुवेर सेउ तहं मेजाई अतिवलवान अनूपलो नाई दोहा
उचिरची रधारन किये चारु काकपखवार कमल नैन जुत मखन निवालक अति सुकुमा
र चौपाई सेउ सुंदर तेहिं अवं निविचरही निजउ तिवनहिं प्रकासित करही बालकवि
धु रेखन ते सेउ बालक महाराड सम मैमुनि धालक करयो रखि मै सासहिं कीन्हे मुनि पेम
ले ससाय कीन्हे तिनहिं निसाचर कै मैं धाये रामको पितु वचान चलाये सरित सुवा
हु सैन मम मनासी येक वान पुनि तेहिं निविन गासी मोरि मराद धि मध्य गिराये केरिका
रन धौ प्रान वचाये बड़ी चार मरहु धिजव आई तुरतहिं आपो लंक पराई त्यागहु सि
या मिलनं की आसा तेहिं विरोधन ते विपति विनासा दोहा कीडारति महं निपुन सयनि
सिचर द्वै हैं नास कनक भवन निन के उरहि जे मरहलाति तोरे घास चौपाई करे अंगना कु
लसर लागे तिय जुत तनिय उन तं सेउ भागे अरु सरमे लंका निज लोचन लखि सोतु मत्र
तिजरभरि सोचंन विन अपराधहु सासति होरे जै है निसिचर सब वे संघारे परतारा केरर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीरा: नसमाना जौनहुसों चुयायन रिश्वाना कुलकलत्र जिपमानहिंराज मित्रवर्ग श्रहसक
२५ लसमाज रहनहिं जो चेहहुन जहुविरोधा स्वामीसुनहु त्यागि श्रवक्रोधा जोकरिरहुन
हिंसिषलषुलैषी तोजैसैनासिसकुलविसेषी केरिसुनोएककथारसमारि जगतकस
सगमगतनधारि देता दंडकवनमंहफिरहुमै क्रिपेमसानकुरप मारहुमुनिजनविकरल
हनिरघ्यो कौसलनृप चौपाई रामलषनतापसधनुधारी सियसंगफिरहिंजिपनरि
तकारी तपसीक्रिसहिश्वंगयहिच्योंने धायो घृत्ववेरहिमाने रामहतीनिवानहसिमा
रे वज्रसदृसतनलजेहमारे जोवोहनहयाकरिदीन्हो तिनहुनहूकोजिपहरिलीन्हो
नयोत्रासितजोसवश्रभिमाना तवतेपापत्यागतपठौना नरुतहमतरपहमैरामति
धरैधनुषवलकौलश्रभिरामति यासहिंधरेश्रतकहिमानो नृपचहुकितलषमयहो २५
नो हरितदुवरहवनमेयाउ सपनेलषिश्रसंगल्योजाउ देता नामरकारारिकसुनतु
रेफरुहुसुनिनयहोइ मैजांनतहौंतासुवलजितनसमनहिंजगकोई चौपाई हनहिंसनि
मुनिवलिहुकिनहोरे हेश्रज्ञानकरैजुधजोरे ताकीकथासुननजिपमेरो वाहनचरन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अकुलाइधनेरे दोहा जोममजीवनचहिये तोतिनकीकछुकथानकहिये कांमविवसत
वनतिनीजहै ताकीउचितदसासवभोई तेहिंसमयसरद्दवैनकीन्हेउ तिनहिंसमरति
जेगजसलीन्हेउ यहिंमहंरामहिंसदेहंनाही नाहकतेसकरहुमनमाहीं एवैनमनासि
षभाववनकैसे भरनचहततेहिं चौ षधिजैसे एवैनकरसुनसलमारीचा तिरफलव
चैनकरेतेनीचा दोहा मेकैसेहुनहिंकरहुजो तिनतयसिनसोसांम हैमनुष्यकिसिजी
तिहैमोसोकरिसंग्राम चोपाई तेप्राकितनतियकीसुनि वांनी आयेवनहिंबुद्धिमेजांनी
तवैसंगतिनकीप्रानपियारी हरिहौउरनिश्चैवुधिधारी मैजनदेषनपृंछउजोसो कारेंय
हसकीषसठमोसो पूंछेजेमैचीकरजोरि विनैकरैमनइतारसवोरि विगतमानकरकोप
नहिंकरै हितवांनीकेहिंलषचाहिरहै नृपतियांचअसतेहोई अगिनिहूंदूसासिजम
परनोरे तेजपरात्रमअंनदवंदसा दउदेव अरुसमप्रसन्नता उनयहैचैनकोउनुये
यांचो नृपहिंयेयेउपजेसोचो दोहा नृपपूजियेजोगरैसवैकालमारीच धर्मनजांने
मोरपसकरेवचनतेनीच चोपाई करसंसयअवमगतंनधारी वेगिलोमाउयिरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं:
२६

रं कुमारी सिय रित राम धरन जब थै है लगि पीछे रिं इ रिसिं कछिजै है तब टेरे राम रिया
सिवांनी घे है लछिमन मति अकुलांनी तेरिं अंतर मयं तत वतरं जे हो हरि सीता तिहिं
लं करिले ये हैं अंहो जो मम कारज साधी रहें तो हि राज्य मे आधी जो न तिकरि है
सठ मम काज करि हो सिर कपांनु तें आज उतां जप वांचै न हि बांचे इ तां तो रिमे मरि
है सांचै मन विचारु जो निज हित होई करि निरंचे पुनि करनु ते सोई सोरठा मैं रनुजा
न मारीच कांपित है इमि कहत भो कौन चतापो मीच मीचु हारतो हि रसव बन दोस
वै ते रे रिपु सां चहै जिन ये सी सिख दीन मां रेन लायक सचिव ते मग कुमारग लीन चौ॰
जो नृपति कछु करै कुकरम ता हिं निवारत सचिव न धरम मैं तुम सो सुनमंत्र सुनायो
सो तुम्हरे मन नेकन आयो राज प्रसाद सचिव जस पावै करै काजु जो तिहिं भावै २६
नृप पाप ते प्रजा पाप रत नृपति पुन्य ते प्रजा पुन्यमत नृप ते धर्म धर्म ते जस रहै सो सु
नीति केवस रहे ताते नृप राखिय सब काला चलें न नृपा वहिने कुचाला ति
हे नपछें मीचहि जो कोई ताते न हिं पालन कछु होई करहिं प्रजा नेहि जीवन आसा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ नृपनीति कुल सुजन हूं नासा सोरठा रोन च हत इमि नाह नीति साम्रम रं जम कथा कस्यो
मृगा वटि फांस संग स्त्रिगालको पाइ करि दोहा भयो निसाचर नास अब रहन नरप
नो हियाई कर्म प्रबल प्रगरे लख्यो का कताल के न्यार चौपाई अब हे मको न विचार
बताबेन सोचनी सतु महो सनि राबेन लषि सो हरि कर सर धनु धरे मे किति कि कि राम
कर मरें मो हिं तो राम बिलोकत मरिहै पेरि तुम्है जत सैं न सबरिहै जो हित सी षउर
रहिं न हियधरौ सो उपवेन उचितै करो जाके काल सीस पर आवै ताहि सुजन की सी
घन भावै अस कहि पुनि मन गुनि मारीचु उभै भांति देख्यो निज मीचु नीक विचारि
राम कर मरिहो पुनि कर अब बधु मु सासंन करि हो सुनि सो रावंन उर सुख छयो पुनि
पुनि मिलत करत अस भयो दोहा कस न कसौ यहिं भांति की बात विवेक विचारि
अब तुम आये प्रकेति निज भ्रम मत सकल विसारि चौपाई बरपिसाच आंन न जोरि
लागे चढ इ जांन प्रति तुम बड भागे मै तु बैसा रथि कर मरि कोरि हो छन मर उसथ
अपार हिं तरि हो अस कहि कर गहि ताहि चढाई रौ बोरथ सुर मन दुष पाई राबें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं: नयेचवरीकरें आयो मृगविचित्रकरिताहियठायो कनकरजतमनिमेंछविछायो सोमृ
२ गकुटीनिकटजबआयो ताहिविलोकिरामसकाई कह्योसियासोंउरमुसुकाई तु
म्हरिहरनकोमितुसरूपा आवतहैनिसिचरकुलभूपा तुमअबरहहुअनलमहंजा
ई रावहुंछायासियाबनाई करहुंयामननरवरवाहिनमम साँसनकरमानि सरलमेरे
सकंधकेपुनिपूजरेतुमआनि चौपाई तैसहिकीन्होसियासयानी लखिमनहूयह
वातनजांनी जोमायासियसीयबनाई सोहरिसोंबोलीमुसकाई मनिमेंमृगविलोक
हुस्वामी आसनलिकटचरतलघुगामी आवहुधरिजोयहिमनभावैन तौकीजमृ
गलेहिसुखपावैन लखिमनकेरासियपनिकरहिकाई धरिधनुचलेरामछविछाई लखु २१
नकह्योयहघ्रमुमारीचू तुरतबाहरनआयकहैमीचू रामकह्योजोमृगतौधरिहौं जो
मारीचहितौयहिमरिहौं मायायतिमायामृगपाछै दोहा जरताजरगहेहलुमनमुख
श्रमविंदुसोहैर वंनवीथिनभआकतचलेरामरसिजाइ चौपाई मृगकहंचरतनि
करहैजाई कनककिरामलखिहरियहाई छंपाकिछयतचहंओरनिहारी सजेतनकह

मुकत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ननरजमारी कहूंकारनमुरसोंपजुआवै निरषिरामछविछकिछकिजोवै कहुंअध
चरेविनमहिडारे रामहिहकिहकिमुलकि निहारै नमवडंजारधरानिकेन आवै पहि
विधिकुरनमगनहमावै पमतेरिजो निनिसाचरघोरा कोपिमरालंनसरचरजोरा
वैचिकोनलोचानचलायो नेहिमहिफोरिवानफिरिआयो निजजननधरिकालिलषेन
पुंकासो रामहिलषिपरलोकपधासो सेत परमपतितउसोरजोकरंहिअंतनम
हरामउनैहरिनकहिउरिसवपावैनिगतिनिरकाम चौपाई आसकहितिलमनचराबि
धनसुरगंन निजनिजभवेनगयेप्रभुछिनमन लनिनाकी अपनीसीचानी रामहुं
गननलगे अवनुमानी परसुनिसीतामन अतिसोची सोचितहै नैननजलमोची
असविचारिफिरिचलेवतोहि सीतहुंहुनिवोलीमैमोही रायलषनकहिमनहुंअ
नाथेसंकरमरवोलेरधुनाथे लषनषवरकहिआनुरजाउ तुछिमनकेरआ
जीतरधुराउ सेयनपहरधुवरकैयोनी निसिचरकोउकीनसपोनी जोरधुनाथको
धउरधारे छेनतीमारसो त्रिभवेनजारे सोरठा नेकिमितेनहिवेन कहिहैमरियुको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं:
४२

रिवै सुनजलमोचननैन सियाकह्यो अनुचितकछु चौपाई बांनीमैलछिमनउरयारे बोलेसं
कितकरतविचारे तोहिधिकार चंडिका अहहूं जोमोहि असीबातैंकहहूं अबसकोहियी
रलखनपधारे सेवकरखानसरासनधारे सूनजांनितहंतायसवेसा आश्रोतवनरसिपते
हिंदेखा सादरकंदमूलफलहीने विविधिभांतिकी आतिथकीने पुनिकरप्रेमआसेय
तिहंमम तौलौमुनिकरियेविश्राम सुनिसियसोभिक्षुक असकह्यो कोतुमपतिकोतुम
वनरहयो तासोसीतासबैवृतांई भुनितेहिसारपूंछनभाई छंद सोकह्योनातिपुलस्तिको
मैनामरावनख्यातिहैं होइ हूंनिसिचरनिकरआतिबलअमितमेरेजानिहैं हितलेनआयोआ
पकेअवचलियलंकामैचलो तेहिसमयसुनतहिंतासुबांनीसीयवाली जनुअसी सेल
लेनयरेजोसिंघकोभागहिधुं आश्रिगाल तौजांनीनेहिसीसपरनच्योकालतेहिकाल
क आवतप्रभुसरधनुधरें छनेंठाढ़रहुनीचु मोहिगलबतहिअरहिंजेरेबलतोहिसमीचु ४२
सकुलसुक्तिकैलैनहितरावनवलीसुजांन प्रगरिहैंमनकरतमो सीयलंकलैजांन चौः
नहैंकीछितिजुतसिपहिउठाई चल्योतुरतसीरथहिचढ़ाई सियहिंचल्योलैरावनकैसें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुधि लियें जात हो हरि निरहि जैसें हा परा महा लखंन पुकारे हे वनता सिय चहुं वोर निहारि सिष आ
रत पुनि सुनत जदाई कोपि नैन के बोल्यो चकुलाई पान्ह हिय न्ह हि बल ने बैन जने मोहि
देषत सठ जाइन सकै चक्र सक हिंदसर धरि प्रभु मिरि रिमिता रे चरित हिं कोधव सनपे जदाई
पर के रह रह सति रथ ढाहो तेहि छन क से लसंम भायो करकदाई कीन्ह्यो पुनि सो रक
ह्यो जात कह पर तिय चोर ढंढ रे चोर लघु पति यो भोर कठोर गेरहिं चकुसे मैं चंदना
चलरहें नाम जदाय पंहुच्यो करि गुसे न हिं पन्हि तौ मम चंड तुंड विषंड त सुंड न करि
कछु है रिकर सिष मोहि देषलछिंपा ति व्रत करी हो पुनि रावन कहै चोर लिके बो
ल्यो को पिजदाय तुम वृद्ध केवसमर चोरी नहि सुदाय न वापितु पितु मरनी च सिरके
रिहै रे भज न चीस चलर नन कर सोच मोहि कि मिक रि नैहै सीस चोधारे कारि सी सनि
गई सति भ्राये कहु कहु वचे लाम उठ यो जाके डरहर परत सुररा जो तेतुम चोरी करत न
लाजो तुम कर उचित प न्हवर न धीर आवेन रहु हो उर धुव कीर कहहर सान नु नाहि हिनि
हासो मन मरें तेहि मैंनाक विचार्यो मघवा उर सागर छपु जो रे मम सन मुघ सो गिरि कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरः मिलेउ बंदि सिर गयेउ नागनु के घाये कौ गरवित छै गरुजहि आये तउ नाराएन संमवल मेरो तो स्यो
९६ तोलहि मजन मट मेहेरे हंसि बोल्यो मै अवपरिजानो गीधन राई अहै पुरानो तेस मसक
रतीर पमोरपर आवत त्यागन प्रान असकहि पुनि देखं धुमरचपलचलापोजोन क॥ म
हपो जटाइ पुजासि प अवनेना रिडेडार पडे च्यो मै पातिमी च संमनी पसकत तन रिजाइ गरव
मेरे दसकंध नै जीति जीति सुरराइ अव जैसे सकल का टिने रे गीधे गीधसो आर चोपाई पु
निकहरे खलछन रहे डाठो अव सहु मोर प्रतार हि गाढो कारि दसो सिर चोचनि लेहों द
सो दिसि पलनि न मेट निदेहो तते तोरि रंन मरे पर चारि कपि सुग्रीव रघुवर पिय नारि मे आति
रकुल सानै निसिचर सर सुपकवच जन तीन्हे धनुसर तउ दे पि हेत तव मनसार जोसिय ९६
त्यागि भागि न हि जाई मोहि विलोकत सिर लेउ म जाइ को सकहि सन तिमसनमू मेरे दस
कंध गहै को आसा भागि न वंचि है खल अपतन सा असकहि पठिमार गनु हिरे को दोः
कोधि न दसकंध विलोको छर चेति को पकरि दस सोस धरि गजबीस सो धनुसर च स्यो
सर निकर छोडे को पिपस्यो पहासो न हनन स्यो पैनि को पकहि बग एज निसिचर राज प

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रं च्यांनु रगयो षल चांम चो चन चोपि चहुं कित चपल चपला सम मपो दोहा पुनि रावन त्रि
ल ति चय गति धनष वै विल गिकांन क्रिये चो षघुरसांन सो तुरि मारे दस वांन चौपाई
ते सरष गउर प्रविसे कैसे पैठहि व्याल वंमी रहहिं जैसे सिर सोडि तल षिज नेन वांना
नु कगीध च्यति जहहरि ठांना रसौ चाप चगुल जगहिं तोरा नव धनु लै रावेन वरजोरा भौ
पित कै सरवर वंन कीन्हो गीध हि घाइ चहु दिसि कीन्हो वांनन वी चवि रंगपति कैसे
ज्यों सोहत सोधक लति जवै से परन प्रहारि वगपति क्रिप जोरा सरन तोरि पुनि धनु
घरि तोरा नै न तोरि रथ षर सव मारे हति हति छत्र चमर मारि डारे पुनि जे छत्र चमर कर
रवी न्हे चो चन हति तिन सिर विन कीन्हे छद सत तरि कियो विन मुंडर थ क्रिप षंड षंड रि
तेउ सो मारि गिरयो रावन लिये सिय जय न रई धुनि सर भेउ सो सव करहि हिताहि सरारि
प रषग रोज वड चरज कियो पुनि उठ्यो रावन चैंके गरि सिय चंद्र सांस हिं करि यो ल
दोहा पक्षि तेज दाई कें रिउ हि क ल्यो रोष करि वेन रैक वुधि रघुनाथ सर कारि हैं जन कुल
सैन चौपाई सिया हरन सेउ वंधु न सहि है च्यात र निज सरसों तो रि हरि है त्रिभुवन नि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर॰ रि करमते कीन्हे । सिय माया कुल सिय हरि लीन्हे । पल न रिति निवी ऐकी ॥ चहै जोंमे सव ज
३० ग का रघु वरे । सर होहिं तो कहु प्रभ जाई ॥ लषि ले धनु सर पर तेउ आई । सो रे छिति रघु
वर सर लागे । वचिहे न हिं सल मो सन भागे ॥ चल कहि गीध तुरन्त ॥ अति मै प पर्यो रावन
पीठि को पकरि लपट्यो । चंगुल चोंच हि करत विदारन । मनहुं महा उन तेय कत वारन
पुनि धरि चंगुल के सउ धासो । चरन पंत चोंचन वहु मार्यो ॥ छं॰ अति गीध कीन प्रहा
र रावन परमऊर रको पित भयो । रघु धरि फरकत अपधरणी परे ते निसिचर रिसि छयो
सो गीध गयो वचाइ अति जन घाइ आतुर मै परि कै । पंप मारि चोय त चोंचं उरत
हरापि पीठि हिं लपटियै ॥ सोरठा ॥ लरत कुपित खग ईस । रविदे खि सोकित सिया । लक
त न गहि भुज बीस । जदपि करत अति तरलता ॥ चोपाई ॥ दस हुवा मन भुज खग पति का
ट्यो । सिय हरि छंडा रथ वांर पहु प्यो । रावन विकल गीध पै धाये । पदयल वहु हरि भुज आनि ३०
ज वाये । पुनि तेउ गिरे आतुल वल जो धा । लन हिं देक देक निकरि जो धा । ह डे हेक व ला
ग रोन पार्यो । ब ड ग अमोध अलरत व मार्यो । केइ पाइ परागि रो वग से ता सिपक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेसतेकालितकलेसा सियले चौरैरथ चढ़नीचू चल्योलंकले आपनमीचू रामरामलखं
नपुनीता रावनकहतजातिइमिसीता विलगनउउनतेरुषि चुकुलाई कहतनाथहरेरेजना थ
३ सेसा ममकुलकेतेमजेठलोतुम्हेउ चितहिनतर कैछीनडमाहिनिजवलुहिकरंइपवरकेजा
२ धनवतितुनिपुनिपवनकहतुमपरस्यो पतिमोर तुमहिविरोगविपाविहिननातेकारहुनि
सोर चौपाई राममहिमेरीवचहिबनुनावहु लेउजगतजसमोहिवचावहु तुमननमचसोनाथकेव
रने कैसेसहइमोर अपरने विनउतोहिवहुमांति अकासा ममहितुसोहुविनरहिं अवकासा
पहिविधिविलपतिलहिछाई रथमहेकहु गिरिमुरकाई करतिसोरकहुविरहवावरी कहू
करत अस चलिउताववी रघुनाथ आपेजुनुमाई अपतेनीचसकातनहिंजाई कहुंप्रलप
तिकायतिकडरोवति कहुचकितचपचहुकितजोवति कहुस्वरअंगकरेनहिवेने पहि
विधिपरीसीपदुषजैनें सोरा नमतेपरचतासिवरपरयाचकपीसनिसारि चीरचीरिनुषं
नसहितसीपहिननतेहडारि चौपाई रावनआतुरचल्योसबेका ।सिंधुनाघिपहुचोमधि
लंका वनअसोकमहेसियहिटिकाई लछमनिसिचरिनसौपिसेवकाई पुनिनिजभवन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरः हिरावँनगयो सियपगलखिरनलखमहँसायो विलपतिविविधिभातिवैदेही सुमिरिसुमिरि
३१ गुनाथसनेही लायकमललोचनरघुनं[illegible]न कवलुविसेपुनिकरिथरवदन आनदअंबु
ढरहिंजिनलोचंन तेईकरतसोचजलमोचंन प्रभुलुररजेनकहिंनिरंतर तेरछिगरेघटि
घलनभयंकर लायकरमगतिजानिनजाई हितसिमोहिमीचहुविसराई लेहा चतुरये
कइगिरिसुताजो अपनेपियसंग रहतिनिरंतरलेतिसुष अरध आधकरिअंग चौपाई
छनविछुरेतवचरहिपषाना अवनहिकठहिकठिनमेप्राना परसिपवँनप्रभुअंगहत
आवे नेकुसमारीजरनिवुझावे कैनिजमीतहितकरहिवुझाई हरहिंसोकमनतनुरि
जराई जोधर्मनिस्योपेकउपकारी नेहिंजिपरम्योरेवअविचारी आपेआश्रमहुननि
हारी कैहैनाथविसेषडुषारी जबकरिहासीरतहुपाई कहिनहिजाइनाथविकलाई
अपनोसोचमोहिनहिजेतो उपजतदुषितनाथगुननतेतो कहुकवरीमेलषनहिथानी
सोईभोगइफलदुषषानी हेरा हेवतसोचातिविविधिविधिहरहिं अवजुगनैनजंतु ३१
कुरीपिजरपतिमहावाधिककैचैन चौपाई यकरप्रकनतकिकहुठगिसीरहे लायना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पषउ व्याकुल सकै कहूँ करनि हे पुरै मीमाई तैंकत करति अहै निठुराई ईसहसो क अवस
होन जाई मोहिं विवरहे ले सिंधु पाई कहुं मोहित निरषति रघुराई जागे फेरि विकल के जा
ई अंतर उर पहि सोन तिसारै तेहि अंतर गिरि सिंधु अपारै ताकों पिरत वर निकों मिजा
ई सेस सार हास के तिन गाई आवत लष्यो रहि है निज भाई मन तिवे हमुष रस्यो सुभाई
निश्चै कियि परि हहै विचारी याकि तन नरई व सोहं उषारी तेस निसिचर हैं नियं नि अव
धम रैक रिसे चरित अनेक तेहि क हितु नित रिहै सकल जग जन विन तिविवेक चौपाई
री अस गुनि वोले अनुज निस आपे तजि मम प्रान पियारी सो तुम लछिमन नीकन की
न्हा के षायो कोउ के हरि लीन्हा तव लछिमन कर हेउ कर जोरी सुनहु नाथ कछु चूक
न मोरी निसिचर जब नाथ हि की वानी हे सौ मोहिं तब सिय अकुलानी प्रभु पर मोकहें
लागिय वतांवन में बहु भांतिन दियो सिषावन तब दुरवचन सिया मोहि कह्यो सो हं
नि कों नमु हिमे रहयो मो सन सो न हि जाति सुनायो है अति उचित नाथमें आयो प्र
भु कर तउ नीकन हि कीन्हा अबला वचन चित्त मरे हि न्हा तेसे कोउ षायो कै लेग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर पोषत मनंन तिसंदेह आस करि आतुर आश्रम तिंग पेषत मजु नैन चौपाई सियहि निरषि नाथ
३२ अति सोचे आस करि नैन न जल ऊकेन मोचे हा प्रिया तुम हे षिन परो तव कस मम सत का
रन करौ जो तुम गई यी प्रिया करि हांसी सो मो हि होत उसह दुष रासी कैन्या सर्वस ताकी
आतो तम को उचित वियोग रहि सलौ होत वियोग प्रान जो जिन को मैं तो प्रिया सर्वन तोनि
न को मो सो विरत सहो न हि जाई हांसी न जहु मिलहु अब आई है सिय पर हिते कुटी विसेषी
के आश्रम पर आन हि देषी मही और कै सयन हि देषी केश्रम होत सांच करि लेषी छंद
चीन्हो न लषि पत वा ठि कै लै गये वन जिय लर हि सम्मै मृग हि गन हरि करि घेन को किलन हं
सकरि जमनै क्रम सस हिं हसन चंपक [illegible] वरन हा ठि मेरत नकि सलै करन को सक नाक के
उकयोत वां हु मना ल उत पल चरन को नेह कीन वो कहुं उचित पर जो मो कहं वचन सैन
मो मरं तैसी बुद्धि तौ राज होत कवच कीन चौपाई हरिनहिं रन्यु को कहुं होई मैं तेहि देषि
हपानी घोरे मिलत कुहुम किसलय तुलसी को निरषि सैन यल पुनि प्रभु सी को ३२
वहु प्रकार तहं विलपंन लागे हेरत हिय हिं चले पुनि आगे नह समीप निरषी नव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नयनचली चोषीमनहु नरन्नकी मच्छी सुमिरत सियविचरहिं वरवनमह विविधि भांतिके निर
खेत रुतरहि तिन लोक रुपोल षीतु मसीया ऊंचे रह सहित निजतिया जो सदा हि सियातु
म जोई च्याई कमलन तरेन होई यहि विधि पूछत न तरुन सों विचरहिं व्याकुल रसहि
करुन सों रोस प्रति नग प्रति मृग प्रति विहंग प्रति पांइन करि प्रीति पगपग मह पूछ
त फिरत परम विकल की रीति चौपाई पूछत चले जनु जहि कानन को हौ वेगि हिं मोहि व
तावहु जो है बोले अति व्याकुल है लछिमन नाथ नाथ मैं हो तुम्हार जन को हो मु
हीं कह्यो रघुनायक तिन कह तुम भगवत सबलायक लमक ह्यो भगवान हिं को है
लषन कह्यो रघुकुल अवजो हैं प्रभु कहे रघुकुल मह कोई सा तुमहिं अहो कह पद्ध
रिसी सा प्रभु कह विजन वन हिं का करिये तिन कह हेरत नारि विचरिये रघुवर कह्यो ना
रि पर को है तिन कह जनक सुता तुम जो है सुनत नाथ कह साय जान की विलयहिं सु
धि न तिकछु च्यपानकी रोस करे परे सिय सी सके तुम मन निरमनि हारि बोलत भै त
हिं सै लसो कोधित गिरउचारि स्यो उसीय कह वेगि षैनन तरु करत हो धूरि मृगजन षग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कु

आरं: गुंनमांहिसबलतादुमनगुंननतरि चौपाई पेनोकहतचलेप्रभुआगे लषिउपटेसियपग
४८ ग्रैनुलागे फिरिउपरैनिसिचरपरदेषो दूरयोधनुसरलषिजयलेषो कस्योमपोनुक
निसिचरसीतै लईबायधोजियतसभीतै देखनजोनिमोहितिंवलहींनो रताधरमति
नहुंनरिकीनो दूरेचमरेरथहु अनुवधुतर मारेलषिचारिमारेघर कोपितकहतवनै
नरिवैनै धंनुसिसितवत अनुनकरिनैनै यहसंग्रामजोनरैकाको लछिमनुमोहिं
वतागोसाको फेरेनिरषिस्ततहिंविन घांना वोलेएमछिरयतवांना छेरमैतौजि
ति हुजगतलिनगुनमानधरुनारसह्यो घहिंविषमऔसरपादहोघरिंसरिसब
गुंनगंनभयो तातेघरेतुमलघहुलछिमनभूतसबवसंधरतहै अतिरोघकरिसरत
जिमेयानकजगतघाकहिंकरतहै हेल असकहिफरकतअधरमभुरंजेवीरसरंग
लछिमनकरतेछोनिनिलियअति आतुरसारंग चौपाई लहविविघमनचषसमसरलीन्हो ४८
धनुघचनारतेलप्रभुकीन्हो भयसोकोपितभवसबभयो निरख्योलषननाथवघने
यो तबलछिमनहेऊकरजोरि कस्योसुनियेविनतीप्रभुमोरि नाथसकलजगकेहित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कारी अतिकोमलप्रभुरहै अगारी निजसुभाप अवके हिं लितन जिये जगजानहित क
नमरसजिये अपराधी एक अनरहित म्हारो चारहु नाथ सकलजगजारे परतौ हीति
नु राउ रिसोई करि विचार करिये पुनि सोई प्रथम बोजि चहु दिसि सिय लीजे मिलहिं न
तौ जग नास सहि कीजै दोहा अस कहि लुपरे लषन पग छमहु छमहु रघुवीर जगतः
व चावहु त्याग अव सोक करव धरि धीर चौपाई एहि विधि समित कीन जव भाई च
लि आगे कछु लषो जटाई पांउ व गलु सेउ पसु उमंगा भरे रुधिर रज है सव अंगा ता
हि विलोकि नाथ नहिं चीन्हो निसिचर जो निधनु बसर लीन्हो सो वोल्यो मै गीध जटाई
देषि लेहु आवहु सेउ भाई सोचित है रघुवर तहं गये गीध दसा लषि अति दुष छये
आयने जंटन जटाई बोरी रजमारी करि कृपा धनेरी सो कर सिय चहै संग मम प्रांतन
परवसतहि लै गयो दससीनन ता सौं जार जुध मैं कीन्हो रथ धनु तोरि विकल तेहिं कीन्हो दोहा चंद्र
हास पुनि नीच लै काटि पषलषगगनोर ले सीतहि सो जात भो आतुर दक्षिन वोर भरे रुधिर
रज गीध को मिले राम मतिधीर कर तन सिय पमूलि जै मोहिं गीध को संक चोपाई परे यह मिलु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं बसों नेति सोचहिं बारबारलो चंनजलमोचहिं लेउसांस व्याकुल हरि कह्यौ उवचरउवपुनि उवमैल
३४ ह्यौ विगतराजचंन बासकरन भो तायर उबवउसिपा रहन भो पुनिपत परम सोक सो मोहि
निरषहं विकल तात नमै तोही ममसोक जागि आगि हूजारै चेउ सिधु होरजल छारै लछिमन
न निरखौ दिन मम काजा अनिषिप प्रान दीन वगराजा अव लिप्रानकद धारे वरे व्याकुल
तातेक कुन लिखहें पुनिकर ध्वैकरंनातजनहारै कुरह उबवरिजाकछुकहिजारै तस रहेउ
कहांपुनि लखेउ किमिनिकस्यो बलजब आरै सीय रसा पुनि किमि मिलु षीकुरहंककुकत्ता
गारै चौपारै कैसो निसिचर क्रिमि चपु अहै कुसायरा कै मकरै सो रहै उषिनरामलषिसी
सउहरै सारसकरि पुनि कल्योजरारै तात नच्यो सियमूढह सांनन कीन्हे माया परम न
यावंन पवंन प्रचंड मेघ धिरि आये तब सियकरलै चल्यो छपाये तेहिमेल खिलरनजुध
कीन्हो सो अहसिलै परविन मोहि कीन्हो करनचरत मो प्रान पपाने भवननेन देवहु कछु
आने मैसारत सो धीर धुनाप्रु जेहि मंद हरि सीय दस माथू विडु मद रत मरें जो जावै
मरे सो चोर वस्तुफिरि आवै तेरा सियहरि देहे जान हरि पर दसकंध अजान जिमिस ३४

फरीं वंसी लगें न जाति अस नसगयपन चौपाई तुम्हा सिय हेत सोकन्हु हिंकरै हो रघुवंसी रोसहिं
धरौ सब कुल मारि तें हिं सीय हि छुडावौ विस्व विदित वर विरद रघु धावौ रहि कहत सो को अहहि
खगेसा काको सुतन कहं अब हें नि वेसा खगपति हेयु लखि करनाती पुत्र विश्रवा कर विख्या
ती मार है कुवेर को राकुति उगिल्यो मास रुधिर मुख ते मरि तज्यो प्रान खगपति उपसारी प
रहु करहु अब सकल तन धारी मरे गीध लागे हरि सोचन चख अम्भोज अंबु कन मोचन बहु
विधि हीन वचन कहि रोवै पुनि पुनि गीध वदन प्रभु जोवै तेहि कल्यो हम याका लकी
पर मप्रवल गति भार या के सग बहु दिन वसे वि[illegible] दुरनि कि मिसहिं जार चौपाई वहु
न पर खग रहत हि फीन्ही अब मम मेहे न रहे ते ताजि सीन्ही पर खगपति मो हि पर नारिसा
रे परो निसाचर कर सों मारो ताप गीध पति मम उपकारी कहीं गए हें किन कहहु उपकारी
त्यागे देह सकल खग गन के राज अति प्रिय प्रान तज्यो मम काज लछिमन देखहु पर उपका
री साधु सत्य सधरम धुर धारी तिर जग जानु निउम रहेपल देखी गीध कमं यें अनुपम देखी
लछिमन सिय कर दुखनहिं ते तो मो उर सोच गीध कौ ते तो मोहि पिता सम पालि न

आर: पती ल्यावरकारकरउपरिगती हेराचितारची पुनिमाथि अंनलगीथरि आगीहीन परि
३५ हिनकैवंधुहेउआकुलहेरनकीन चौपाई परिथीरजतहरिवैसनलागे गीद्धराजपर ब्रति
अंनुरागे हेनजोगुमष फलश्रुतिगावै गीद्धराजसोगतितैपावे लरिविज्ञानप्रेमसष
न धामा आंईमैतनहषघनस्यामा जाकेउपर औरनहिलोका मसोप्रकासरिआंनर
चोका जरैकेगषेफेरिनहिआवे गिद्धराजतेनेरिपुरजावे पुनिरसरघगतिप्रभुते
हिहीन्ही करि अस्नान कान्हिसवकीन्ही धसोगीद्धनवसुद्धसहया अस्तुतिकिपच
ठिजांन ऊंनंषा वैकुंठहुलगिभोगसोभोगा तुहिगयेतिहंसवभवरोगा हेराफे
रिऊमजसीदेगयोगोपुरनिरचुद्धधाम नित्यसषेहेवसतमोनिकरजांनुकीराम चौपाः
चलेरामपुनिहेरनसीया आगेलषिकांननकमनीया बिरहविषासोंचतिननृतये म
गनिविलोकिबहरनअसनये सठमारिचहेहेरनधारी तेहिंकारनंगेपानपियारी मगि ३५
निमारिहेनकोउदुषहेलो जिपदुध अथअजसहिसतिलिसें चसकूहिवैचिसरासनधा
पे हिपनैनीगुनिसरनचलाये ततलनते विधुउदयनिहारी कहयोरामहताआगिविचारी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जतिमन सलिल वेगि लै आयो धायो सहसवाणि उठायो लषन कह्यो यह अवरैन आगी
भयो उदै यह चंद्र अभागी होत ताप करी पाकी किरिनि ससि किमि जानै हे भ्रात लछि
मन कहमग अंक यहते रिषि सीजिये तात ६ चौपाई सुनत कह्यो हरि राम जनैनी राय जा
नकी कोकिल बैनी अस कहि करन विलाप हिं लागे ३ सुरति तय पुनि व्याकुल जागे
छनक मां रससासि पूरन ये घ्यो हरि ते रिषी घमपूछन लेष्यो चलो लषन तहं तर हरिक
ह्यो फैलि मसी यह आतपर ह्यो लषन कह्यो निसिचर कहु हार ३ मम करि ये प्रभु स=
सि ये जोर हरि कर जो ससि धूमि कतकारे तिन कह सिति छाया यहि माहे सुनि हरिके
ह कर हेधरनि कुमारी हाय प्रिये मम कर हु सुधारी पुनि हरि कह्यो सुकवि बहु लछिम
न कर ससि चंद्र लहं न कर वरनन ६ कोउ कहें ति या हिव लंक को उघ कहें हि कर रस म=
सिंधु को कोउ कहें हि सिति छाया परी कोउ कहें हिंजल धमाई ६ को कोउ कहें हिरणम र
गु कहें हि कोउ मृग चर्मया कोउरलग्यो मेगन हु धूम तहिं आलिया के माहि विरहा नलज
ग्यो होत मो तिंजर एवं नरेत को प्रगट कीनसससि आगि पैला ई मिसि सकिरिनि के सोर च

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर॰ हुकित जागि चौपाई पुनि रंधुनाथ पनि रावि कै चंदै कल्यो ताप करहै अति मंदै मण्येमंदराच
३६ लसो भयो औरेवग्रीतन पीसिनगयो लहुन घारंजीन सठ तोली लष्यो हेत देनद्धवमो
ली जो न है न न सियमुष अनुहारी तौ सर हंन नितो हि रे तेउजारी पुनि अति विकल लक्षहंन
अस लागे विरह विथा महरहरि अति पागे भयो चंद्रघर तन रन समाना लगत अनिल
जैनु वेधत वाना गऽहित र्दसमकुसुमाडु माला चंदन लेपल जैजन ज्वाला भई कल्प
सतसम पहरराती देति उमरंडुवना हि सिराती सोरठा प्रानद्ध मे अबभार सिय विजोगन
रिजार इसति सोवा समुंद संसार मो हिय हिंछन देषो परति चौपाई पुनि हरिकृत रंरे डुनी १
ता उर निवार घल अति अपुनीता मंडल मन मनसिज वानी सुनि मोहि मसौ निजरु
षरिउचित गुनि विरह ज्वालमम तन न जरि रहयो जरे जराव न हित सरग लयो यह नहि
रीतिधरम की तोई पामे बीरकरत नहिं कोई पुनि कहै पाचौ सरत तुवस्टुटे पुषसेव रै ३६
मोहियफूरे घातिती हंन विरहागि निपरे भोतन लगत लसाँ वानहं जरे अवतेस तितनिर
आउधकेसें विवविहंजनव रविवधरजेसें मैयक उपीमनिन उवगयो सौनौ चहत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीकउ परम भयो दोहा पुनि अस सोक सोकरत मेयपल्लव बलाले तोर अति सियके तें नउग

सो अनुतनमयो मनमोर चौपाई तुम्हरे कुसुम सिलीमुख आवै मोहि यमदहन सिली

मुख धावै मोरितो रिस मतारे अवै कछुक भये रद्र सिमो मन गहै तुम लाति कें नजुतमै

जिपतीना तुम अस सोक मुहि विधि दुख दीना रघुपति मन माहि यों मुनि विधि भयो जिसतातें पललघ

रिसबगयो नैन नचार नीर केहि गयो तिय अपहरन तेज रतन भयो लोतउ सासन सभी रहुजयो

सिपसुमिरन मयसिपमय भयो तेहि कारन रतन भयो अकासा भोय हि विधि सब तन्त्र विना

सा कलिस उनैपरकठिन सरीर विनहुं तनत्व जीवत नहि पीर सोरठा फल्गी मैं दीसोक गो न

मोकतनार सहस अव लषिन परहि मो हि लोक गहइ लषन मै गिरत तै दोहा अस कहि

पुनि पुनि बिलापिय कै विकल भये अति धीर तब लछिमन रघुनाथ कहं पांय पर प्रभु धीर

३ हरि कहें धीरज सोक कठिन सोक जो नेक मिस तउ तीप अपहरन कीरा पलाजकि मिनारे

चौपाई सुनि लषन हुं अति सोक हियापो औसर नहि असगुनि विसरायो कह्यो लषन मो

नाथप्रमाना तरनि निरा धि बिगसे जल जाता करहिं सिलीमुष कमल निरासी जेंनरवि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं:

३७ विरहविथाकीगांसी धौंतमखंउसतेजनिछये विगसततभागे आतपतये देषियउरितमपेरविसहा
सुधालतापूलजनगृहा मनिरविकांति अनलकुन भरती मनहुनाथलउविचारतिकरही हरि
करभाईनपोनभये तजिकेचुरिमवंगमवथीये फलितविषमविषयाकहंगनी तरनिनप
रताहीसिरमनी होत पुनिलछिमनसमभाइप्रभुनित्यकरमकरवाइ तहंतासियकाननसे
धनकरगहिचलेलेयार चौपाई मगविचिनुतेहिवनवहुभाती गारगवैगेडागजजाती सार
दूलसरभनतेघोर भूतवेतालकरालकुसोर कुसमितसघनकुंजकुलमांही चुवहिंचारु
मकरंदसदाही तेहिंजलपूरनआलवालहैं वोलिरहेतहंमधुपमालहै कोकिलवाललिततन
हंषेलत कोमलकरिअलापरसरेलत नांचहिंमजुमनोहरमोर विचरहिंचहंकितचारुचको
र अतिउतंगतरुलगेअकासा तहंवहुविधिवरविहंगविलासा विविधिजेनतिनकेफलघाती
सुधासरिसरसहैजिनमांहीं होत हेरसालहिंतालकुजोतमालवकुचनाल औरहुंवहुविधि ३९
विटपगनतेहिंथललसहिंविसाल चौपाई सीचैंमरुजलभनमतंगा सरलसपरनसुवेनुउ
नंगा लालितलवंगलननसोमडित सोहतऔरहुलननअषंडित पुहमीपुहपपरागनिपुरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विविधि विचित्र वरन सों लहरी कुसुम नहरि तन कुसुम निधिप लासा समी सलितन लितिकरति हं लासा
जैनु विवाह प्रतिपल तु हयो गयो कहुं चैन अैसी हलविसों हयो विचरत न तन मरि षकहुं भारी तहं
वनंजनं तजं मधुरी निहारी फिरनननजु तकच हु चन धन सोभा पावसरित जंनु है अभिरामा
कहुं किसलै विजना निलसों री अरवी उत्त कोठि तेसिजो री होरा कहुं कर कित अवतम धु
त रुत्त ति सों वन भ्राज गुंज कित सुष आंसु न नतरे मन हनि रविरथु एज चौपाई चौ विधि कम
ल कालित व हु सरी सीतल अमल अवु सों भरी आरि अगास्तिमनी सन नारी चंदन अग
र कस्तुरी धारी ते असनान करहीं तिन मांहीं जल सुगंध मय परसत सरहीं चलि रहिहिं र
सिक लै वयारी निकासि संधन वन कुंजनि भारी तिन सरितन तरंग सर सोभा त विचरत विर
हिन विरतय सहावत विरहविकल अैसे वनं मारी फिरहि रामग हिलछि मन वाली कांक चेह
सकर परवांघे किरकिरात परसी सउ ठांये हहिन सेत फेनी फुंकरई षंजरीर तेरिय फन निवि
चरई होरा तिन हिं निरखि मन गुनत प्रभु करत अस मयरकाज कहा अधिक सिय विरह तें
कैसे मोर अभाग सोरठा षंजन सचत राजि हहिनै पेनय सचत पद परग नि आ तिला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं जि ।सियबिनक्योकरिहोइजी ९ होइमरनतौमोर हाजिहोइतौलषंनकी करिकरिबिबिधि
३८ निहोर आगकैहपुनिचलततमे २जोतिषहेउसुजांन निहरिकागकरंपीठिहै आगेवि
योपयांन सनमुषकरिषंजनपरनो चौयारैहेउबंधुधनुषसरलीने संधनगरेन अवगा
हंनकीने निरखौनतहानिसाचरमारी उभमरुवदनमहाभयकारी भारिजैहेउजोजंनम ज
रि आवंहिमधिजेजीवषातधरि नामकबंध अंधहेउलोचंन तेहिभुजमधिहेउजेउ
षमोचंन हरिकहमाइनिसिचरदेषी सिरविनअ्रस्मंतैविसेषी परिकैवडेभजनिम ५८
धियरे कोनिहंभांतिबंचियनरिदरे लषंनकह्योनिजबलहिबिसारी करोकतालघुवा
तषरारी सोसुनितनसधिलहिरधुनंदन कीन्होमननताकोभजषंडन कवित्त घ्रलेरवित
जवारैज्यालावलीजगीभारिउठतीउत्तंगवीचासातौसिधुपायकी कीन्हेकरिची
तकारतालीधरावारवारथाम्होनहिरहैसेसौकेहजारमायकी कूरअकुलांनलागेसु ३८
जोंनआनंदयाजेवीररसबंधुराम्योदेषिउतिनाथकी कोलहूहकारिबोल्योहहूती
जोनैनबोल्योकरतेकरालीकरवालीरधुनाथकी हेरा रननचरनजोलौलषनतोसौ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असिरनिराम मित्र करि रविनि भुजा कारी लखि न हूं धाम सोरठा सो करि मन हिं विचार
कहै कौन रहे अति वली मम भुज कार नि हार देख हनुजन नहिं निसिचर ते दोहा प्रभु कहें
उर सरयू सुखेन नाम मोर है राम लछिमन नहें न को नाम मैं अरे अजो ध्या धाम चौ: हरीनि
साचर नारह मारी दोहा जन तन वन वन फिर हिं दुखारी देव जो गत व भुज मधि आये वचे वेहित
भुज कारि निज ठारे तुम को है अब करहु कुमार सुनि सो बोल्यो हिय रघुराई करि करि हुं
नियुं नियम मुख दुख इन धन्य धन्य मैं रघुनंदन जो तुम मम समीप प्रभु आये सकल सुक
त के मै फल पाये पूरब सुरपुर गंधरव रहेउ अघ शाप करि लघि मै रसेउ पुनि रिस मो कर
घोर सराप निसिचर होउ सतउ परिताप मै पूछे हैं ते रि आयहिं मोचन मुनि दयाल कह
य रिजल लोचन दोहा त्रेता जग श्री राम को हैं है जब अवतार तब वह रिहैं ते आय ते सरि
त सकल भव भार निसिचर कैतय कीन मै विधि अव ध्यनता हीन सो सुनि है निरसंक अ
ति लोकन निज वस कीन दोहा करि करि समर निभुज निवल जीते उ अमर दिगीस वज्र पानि
वज्र हित सो धरति ये ढिप गजसीस चौ: निकरि यरे दृग सेन लिं भयउ विधि वर हतनपान न

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आ॰रा॰ हिंगयउ तवतें नारद तिय सुजपरे बाढ़ पजीव जे याइ यधरे हरी छयवेग हिं गाउ वने पे ई धनुम
३९ रिममतन हिंजुरैये रिव्यस्युधरि सियसधि कहिहे तुमहिंचि लोअ कि मोर आति लहिहे
सुनत रामतवनेसहिं कीन्हा तेहिकहर्षसहि सतन हीन्हो परस्हिनक्रियभे सुनधारी आ
स्तुति करि छकरस्यो नितारी जेहि वयुध्यानासे वासिवकरे कासीनामकरत भवहरै
नामरूपसो मठन जाने नारक जानमाँ न उरआने होत दूरत सियकरं धनुधर पर आन
यमहेउ भार रहहुँस हममन वसे सो करसी सनवार सोरठा चाहिआ हिरछुरय
जेग न्नाणपर अवधपति हेजेमो हिछ उर निजमाया ते करि कृपा चौ॰ हरिकरत
ममम धाम महिजाउ तेहि प्रसन्न भये लखितेहि भार चलत कल्लो सवरी परजे पे नाकोसुंदरवपुहर
२ सेपे ताके उर आति भगति तुम्हारी ताहिं नाथ अबकं उसु धारी सो तुमकत निज प्रीति रिम्हाई
सीता की सरचवरिवतार अस कहि चाठि वे वानसोगयो मगनमता आन हरि नयो आप ३९
सेवरी पद हेउ भाई सो लखि परम मोहसोहाई धरि करती दरिवर नानि ताही निजसहरकीप
बारि विसारि चरन परिपुनि पुनि विपुजोरे चवक अवुप तवुजधोरे पदपधोइ मवरुपसो
रसुंदर तेपजो परमरनेत निज देहसी चेउ जेत आन हमत हिंजकें पुनि धरी वउपुजित सपफल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमनतसेमलरहे संचित जे कीये हरि पांहि अतिमुरमोहि तिनहिं समहि सेवही हिसुखरिये सो:
वंधुलहित अंचवार सवहि वोली जो हिंकर आनंद उर न समाइ जय जय जय रघुनंदि जुनि करति
चौपाई नाथ गहुसमसमुनि माते गा रहहिं रहहिं सुभरति जितत्रैगा तिन को सेवा मे एहि कार
न करत रहि हतवरखर जारन लेपरलोक चले नज वल्लाजे मोकहं सांसन दिय अनुराग रस
रपसुतपर आनमराम तिन कर ध्यान धरेये हिंठाम भागवंतीनै वस कछु काला ते
है सुजन सरि करन विसाला तिन हि निरषित तन तप वल जारी जापई तिन के धाम सुषारी
सुनि सो रसि तामर मति सीनी वसी रहीत वे तन रंग भीनी विरषेन जे मीठे फल चाषे ते
तव तेत वे हित धरि राषे तेल गर सांसन अव सफल भो आये तुम सम जेर अस कहि व
9 हावि हाकि रही वोली पुनि सीं निनेर चौपा: जोररसेन सुषगरउन मयउ सो प्रभु मैध
घर वैठे हिल रेउ मैं तव दास सदास की दासी तुम सत चित आनंद प्रकासी मन वुधि व
चन अगोचर जोई वड अचरज मम गोचर सोई मो सम अपरन परतु मसो रहि दासी
तेहुं नाथ मैं का को करि सवरन जाति परम अविचारी किमि अस्तुति करिसकों तुम्हा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरं:
४०

ले
रि कैपन्नरीननके माहें तुम हीवसहु मनन्हिं मम आई पुनि वोप्रभु त्रिभुवननतारन मेरे मिल
ननक्ति हीकारन आश्रम जाति पुरुष अरु नारि इनमहं नारि विसेषि विचारि होत वे
दपठेव अरु तिन मषतप औरे इन आदि साधनन तें मेनामिलौ भक्ति विना श्रमवारि
चोपा: तातें कहहुं भक्ति के साधन जेहि विधि करहिं जीव अवसाधन सन्तसंगति ममकथा
करव पुनि पुनि गुनवरनन मोर हि हिंसनि पुनि ममकथा माहें अतिप्रीति पुनि आचा
रज सेवन रीति ते पापुनि ममपूजन मोहि सो रनाम पुनि जपव वसहीं जीवविरागस
हित ममभावै सवजगमहं मानहिं मेहि चाहै होहत तासु उरपुनि विज्ञानै तातें निजसह
पपहिचानै असमाधनन वभांति करैजव प्रेमलक्षन तो उर उपजै तव जाति कुजाति
जो निजगको उ मुक्ति लहहिं अनयासहि सोउ होत सन्तसंगति ते होहि ये साधन: ४०
आश्यकार सन्तैसंग ताते करहिं जिनके विमल विचार चोपा: तोरे उरपरमगति रे
मोहि तवसमीप ताते मै धारि तो कहं सवरीभक्ति कहाहै विनश्रम औरेति देहुं जो चा
है सो सनन करहिं ताप दै मो चुनि ज्ञानी होइ जो पुहुं करलो चुनि विनश्रम और हि देह

चार:
४९

जोचाहे मोसंतनपूं हेडनरकीनांई पैप्रभुकहें आपकेसासैन गयोसीपलेलंकूरसानन तो
तेनिकर अवैपणोसर तरंपुनिरिष्यमकमुमगिरिवरधारिचरनतेलिकेरिपसनाथा सि
प्रभुधिलखवमनेरघुनाथा मविनजनसुगीवेनहारे तेउतिपरघडघितमहरे ७९
तेउड्षिनतिपडघहिचालीबंधुउरागिरिमहरहें प्रभुकरिपतिनकरेमीततेउमीत अ
निसमएप्चरहें वेकेरहिगेसबकाजमेअवजारवोनवपुरचहो रिभिजाइपेप्रभुतनके
जवतकहेहेतनपवलमेरहो सोरठा अतकहिसोतनजारि पारैजोगिनअलमगति जे
हिपरइपेघरारि तारिमुक्तिसबसुलभहैं देहा सवरिसवरिजातिजोपाईगतिनिर्वान
जेडुजरघुवरपरभजेतिनकेसमकोआंने सोरठा स्यांमसरोजरूहस्यांम रामनामअ
भिरामतन भजहितारिसवजांम तजिकलेसविज्ञानको इतिश्रीमहाराजकोमारश्री ४९
वेघूसाहेबविरचितनाथसिंहजूदेवकृत आरन्यकांडसमाप्तः फागुनवदि१०सोमारकोस
वत१९०३केसाल श्रीराम रा मश्री राश्री मश्री राश्री मश्री राश्री मश्रीरा श्री मश्रीरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरन्यकांडसमाप्तं ॥ १५५०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh